सनातनभजनदीपिका





खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

ॐ

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

सनातनभजनदीपिका

रचयिता-

पंडित भगवानदासजी शर्मा

अभ्यर्थनेयम्

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

संस्करण : फरवरी २००६, संवत् २०६२

मूल्य : ३० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

भूमिका

प्रगट हो कि यह परम मनोहर पुस्तक श्रीसूरदास, तुलसीदास, मीराबाई व नारायणस्वामी आदि के रचे हुए ग्रंथों में से भजन इकट्ठे करके तैयार की गई है। मेरा यह खयाल है कि आजकल समय ऐसा आ गया है कि हम लोगों का दिल भजन, पाठ या कोई और शुभकाम करना चाहे तो नहीं लगता और इधर उधर दौड़ता रहता है, तो अब हमारे लिये ऐसी विधि क्या है, कि जिसके द्वारा हम अपना जन्म सफल करें और पापों से छुटकारा हो ? वह यही है कि महात्माओं के बनाये हुए भजन गायन करें, जिनमें दिल भी झट लग जाता है और परमात्मा का भजन भी हो जाता है और सेहत को भी फायदा पहुँचता है; क्योंकि भजन गाने से दिल खुश होता है तो उसका असर जिस्म पर पहुँचता है, इससे बहुत ही फायदे हैं, ज्यादा लिखने की जरूरत नहीं, मेरी इस पुस्तक के बनाने की यही मनशा है कि सब मित्रगणों को फायदा हो और अपना जन्म सफल करें, साथ ही यह भी निवेदन है कि मैं भाषा अच्छी तरह से नहीं जानता हूँ, अगर कहीं लिखने में गलती हो तो कृपा करके माफ फरमावें। मैंने बड़ी मेहनत से यह भजनों की पुस्तक तैयार की है, जो इस समय के लिहाज से अटकी हुई नाव के समान चम्पू की तरह इस भवसागर से पार करनेवाली है, आजकल भजनों के विना और कोई उपाय नन्दनन्दन श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के मिलने का नहीं है, केवल भजन ही कलिकाल में भगवत्प्राप्ति का हेतु है। भक्त जनों के पास भजनरूप रस्सी है जिससे भक्तप्रिय भगवान् बांधे जाते हैं। भगवानजी ने कहा है : -

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

अर्थात् मेरे भक्त जहां गायन करते हैं वहां मेरा सदा निवास रहता है, मित्रगणों को मालूम हो कि पहली बार किताब छापी गई थी तो कुछ गलतियां छापे में रह गई थीं, अब वे सब ठीक कर दी गयी हैं और कुछ भजन और भी शामिल कर दिये हैं। मैं यह भी सहर्ष प्रकट करता हूँ कि मेरे मित्र पं. निर्भयसिंहजी सहायक मंत्री सनातनधर्मसभा शिमला व मान्यवर अध्यापक पंडित युगलकिशोरजी भट्टाचार्य ने हिन्दी भाषा के शब्दों के सुधारने में मुझे सहायता दी है, जिसके लिये मैं उनको धन्यवाद देता हूँ।

भगवानदास शर्मा,
क्लार्क अपर इण्डिया बैंक, शिमला,
ग्राम- बराही, जिला- रोहतक.
चैत्र शुक्ल पूर्णिमा सं. १९६५.

प्रार्थना

ओ३म् यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।

यजु. ३६।१२

हे सर्वान्तर्यामी परमेश्वर! निर्भयस्वरूप परमात्मन् ! हम इस संसार के किसी स्थान को भी भय से रहित नहीं पाते। जल के मध्य, पृथ्वी के ऊपर और पर्वतों के शिखरोंपर हम नाना प्रकार के भय देखते हैं। यही नहीं, कि प्रकृति के साधारण स्थानोंपर हमें डर होता है, किन्तु डर से बचने के लिये जिन घरों को हम बनाते हैं, भूचाल आदि के अवसर पर हमें वे ही भय वा मृत्यु आदि के देनेवाले हो जाते हैं। इसलिये हे अभयदाता परमेश्वर! हम चारों ओर से भयभीत हुए आपकी शरण में आते हैं और प्रार्थना करते हैं कि आप जहां जहां सम्यक् चेष्टा करते हैं वहां वहां से हमें निडर कीजिये, अर्थात् आप सब स्थानों वा धामों में विराजमान हैं, इसलिये हमें सर्व स्थानों से निडर कीजिये और हमारी प्रजा में पशु आदि जो कभी कभी दुःखदायी हो जाते हैं, आपकी कृपा से वे सब सुखदायी हों।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

भगवानदास शर्मा.

सनातनभजनदीपिका

---०✻०---

वर्णानुक्रमणिका

नाम	पृष्ठ
(अ)	
अटकी मेरी जान	३७
अरजी सुनो कुँवरजी	१५
अँखियां मोहनकी	२९
अरे मन समझ समझ पग	२३
अरे नर तरनको तेरे	६३
अमोलक रामनाम	८४
अंजनीकुमार पवनसुत	४४
(आ)	
आओजी आओ मेरी	८४
आज सखी प्रीतम	३७
आज बनवारी बने	३६
आज इन दोउन पै	४७
आज रचो रसरास	४७
आरती जुगल किशोर	९२
आरती रामायण की	८९
आरती श्रीगीता की	८९
आरती कीजै राजा रामचन्द्र	९१
आरती कीजै हनुमान	९१
आली मोहि लागत	४४
आदौ राम	१९
(इ)	
इस नन्दके फरजंदने	३७
इतना संदेसा मेरा रे	७८
(ऊ)	
उधो करमनकी गति	४७
(क)	
कर सुमरन मन राम	२५
कर जोडूं और शीस	९१
केडे बन रामने लिया	४६
करी निंदरा जो प्यारी	६१
कमलनेत्र कटि	९२
काहे न मंगल गावे	४१
किसने सिखाया श्याम	१६
कीजे गमन भवन में	३०
कुंज बन क्यों छोडी	४४
क्या तन माँजता रे	८३
कैसी बंसियां बजाय	५१
कैसे तुम गणिकाके	६७
क्यों हरिनाम बिसारा	२०
क्यों आलसमें आया	८५
कौन सुने प्रभु बात	५५
(ख)	
खबर ना है जगमें पलकी	५८
खेलै संत सभी मिल	८७
(ग)	
गम खाना चीज बड़ी	८२
गरब करेसैं जात घट	६२
गागर ना भरन देत	३२
गोविंदा तोरी भहिमा	८६
(च)	
चल रे योगी नन्दभवनमें	४०
चल करके देखो प्यारी	७१
चले आते हैं मोहन	६३
चले गये दिलके	६८
चलो री सखी दर्शन कर	४५
चलो गोकुलमें नन्दके	७७
चन्द्र खिलोना लेदे री	३९
(छ)	
छाँड़ो लंगर मोरी	५२

नाम	पृष्ठ
छुड़ाओ रे अब पति मेरी	७८
छोड़के सारा बतन	१६
(ज)	
जमुना नदी के तीर	३२
जहां व्रजराज कल	५२
जय जय जुगलकिशोर	११
जपो मन नाम ईश्वरका	६४
जरा टुक शोचरे गाफिल	६६
जप ईश्वरको ईश्वरको	७६
जगके रूठेसे क्या हुआ	७८
जयं शिव जय शिव	९४
जय जगदीश हरे	९५
जप मन हर गिरिधारी	८३
जानकीनाथ सहाय करें	५०
जिन हरि पायो	३०
जिनकी लगन	२०
जिनके हिरदे हरिनाम	२८
जिसके घरमें हो कंगाली	१८
जिस गाड़ीमें जाना	७६
जै श्रीरघुनाथा	९४
जै जै जै जै जै जग	५७
जै अंबे गौरी मैया	८९
जै शिव ॐ कारा	९०
जै तू विश्वनाथ है	६७
जो जन ऊधो	२१
(ट)	
टुक बंगलामें बैठो	५२
(त)	
तुलसी महारानी	९३
तुम हो प्रभु चांद	४८
तुम आओजी आओ	५३
तुम टेढे म्हारी टेढी	५३
तू बड़भागन गूजरी	३९
तू गरीबको नवाज	२९
तेरे तारे हरि निरंजन	२०
तेरी शरण में आई	४६
तेरी सूरत सानू प्यारी	४६
तैंने वृथा जनम	६५
तोहि डगर चलत	३२
(द)	
दरश अपना जो तुम	६६
दिल लेके चले जाओगे	१६
दीजो दर्शन श्याम	१७
दयानिधि तेरी गति	७९
देखो री यह कैसो बालक	४२
देखो री यह मुकुट	३८
देखो हरि छबि	४५
दे दरशन मेरे प्यारे	४७
देखी कहूं ग्वालिनमें	४८
दो पता बेलफल पाती	६४
(ध)	
धन धन भोलानाथ	७४
धीरे चलो तुम	७२
धीरे चलो री कुमार	७१
धिक धिक नरनारी	६६
ध्यान ईश्वरकी तरफ	६१
(न)	
नमो नमः तुलसी	५९
नहीं ऐसा जनम बारंबार	७३
नहीं कुछ काम दुनियासे	६७
नाचत छैल छबीलो	३३
नाथ कैसे गजके फंद	२७
नाथ अनाथनकी सुध	५३
नाम जपन क्यों छोड़	२३
निर्धनके धन रामनाम	७०
(प)	
पत राखो मेरी श्याम	८१
पड़ा लोभ मोहके	८५

नाम	पृष्ठ
परब्रह्म परमेश्वर	९
पिया तेरी साँवरी सूरत	३७
पीलेरे अबुध	२४
प्यारी तेरे अंगनमें	५३
प्रभु मोहि ममताने	१६
प्रभु तेरी लीला अपरम्पार	६५
प्रभु मेरे अवगुण चित्त ना धरो	७९
प्रहलाद कहे लड़कोंसे	८०
प्रीतम तुम मोहि प्राणसे	३१
(ब)	
बंशीवाले बेग खबर	५६
बगियामें चलो	७७
बार बार वर मांगहूं	५९
बृन्दावनके राजा	३६
बिनती कुँवरकिशोरी	३१
बिना रघुनाथके देखे	२६
बिन काज आज महाराज	१३
बिगड़ी कौन बनाई	८१
बोलो सीताराम	७४
ब्रजकी लता लगे	५९
(भ)	
भजो रघुबर श्याम युगल चरणा	६०
भक्तों के काज सिध	५६
भजन तो बनता नहीं	८०
(म)	
मनुवामें वार डारूंगी	३७
मदभरे नैन रसीले	३५
मत जाओरी आज	८९
मन मोह लिया श्यामने	५१
मनमें धीरजको धारो	७५
मत भूले रामका नाम	७३
मन कहां लगा दियो	७४
मनलागा मेरा यार फकीरीमें	८०
माई तू सुन री यशोदा	४२
माया काहुकी न भई	२१
माथेपै मुकुट श्रुति	५३
माथेपै मुकुट देख	३९
मिलने सुदामा आये	५७
मुखड़ा क्या देखे दरपनमें	८४
मेरे तो गिरिधर गोपाल	३८
मेरी लाज तुमको	३२
मेरी तो जीवन राधा	३१
मैंने देखी री आज मोहन	२९
मेरे माधो मैं तेरी गति	५४
मेरी सुध लीजो	५४
मैं जोगी यश गाया	४३
मैया मोहि ऐसी दुलहन	१२
मैया मैं नहीं माखन	४०
मैं हो रहियां आधीन	५६
मोर मुकुट बंसीवालेने	४०
(य)	
यह जग है गोरख धंदा	४१
यह कायाकी रेल	१९
यशोदाने कारी अँधेरी	४१
यशोदा बरज ले मोहन	१७
या ब्रजमें कैसी धूम	८७
यं ब्रह्मा वरुणेंद्ररुद्रमरुतः	६६
(र)	
रसियाको नारि बनाओ	८७
रघुवर कौशल्याके लाल	७१
रघुवर तुमको मेरी लाज	७२
राम सुमर सुमर	२४
राम सुमर ले सुमरन करले	४५
राम राम राम जीह जौलौं	५८
राम कहनेका मजा	१०
राम रामेति	१९
राम जप राम जप	७२
राधे कृष्ण क्यों नहीं	२६

नाम	पृष्ठ
राखो लाज हरि तुम	२३
राधाकृष्ण भजो मन	१७
रानी गजब कर डारा	१७
रात सखीरी सुपनेमें हरि देखे	६९
(ल)	
लज्जा तुम्हरे हाथ है	१२
लगे हैं दो नैयना रामसों	६०
लक्ष्मण सीता कौन हरी	७७
लाज कानको छोड	५०
(व)	
विघ्नहरण गौरीके	९
विश्वपतिके ध्यानमें	७२
वैद्यवाकी जानत बला	६८
(श)	
श्रीकृष्ण दीनानाथजी	४३
श्रीरामचंद्र कृपालु भज मन	९५
श्रीराम राम कहने की	५६
श्रीरामचंद्र दशरथके	१४
श्रीराधे प्यारी दे डारो	५८
श्यामकी ऊधो जुदाई	२९
श्यामकी बंसी बन पाई	५४
श्यामबिन बीती जात	८६
श्याम मोसो खेलो ना	८८
श्याम तेरी बँसुरी नेक	५९
श्यामसुंदर ब्रजवासी	४६
श्याम मेरा माखन	६१
(स)	
सब सुख राम नाम	२३
सखा तुम बोलो	१४
सखी तोहि ढूँढत हैं नँदलाल	५१
सखी तबसों चैन नहीं	१५
सब दिन होत न एक	१५
सबसे उंची प्रेम सगाई	११
सनातन धर्मकी जै जै	११
सखी तुमने सुना	६१
सखी उस श्यामने	६२
सखी दईमारेने	६४
सभाका जलसा सालाना	८२
सभी मिल राम भजो	५५
साँवरे शरणागत तेरी	३३
साधो कलयुगकी गति	५५
सांवरा मेरा दिलदारा	४६
सांवरे शरणागत तेरी	४८
सुन्दर अनूप जोडी	३८
सुन लीजो बिनती	२५
सुमर सुमर हरिनाम रे	२४
सुनो नन्दके लाला	५९
सुन ले अरज मुरारी	४४
सुनो फरयाद कृष्ण मेरी	४९
सुदामाजीको देखत	६८
सौदागर हारे जाते हैं	२५
(ह)	
हरि हम पाप कियो	२७
हम आये कृष्ण तेरी शरणा	२२
हम भगतनके भगत	२२
हरि ना भजा तिनके	५१
हरिसों लागा रह	१२
हम ना किसीके	६२
हरएक ढूँढते फिरें	६९
हीरा रे जनम तैंने	२२
हूं आशिक तेरे नाम पै	१८

इति वर्णानुक्रमणिका समाप्ता।

ॐ

श्रीगणेशाय नमः

सनातनभजनदीपिका

---०※०---

स्तुति श्रीगणेशजीकी।

विघ्नहरन गौरीके नन्दन, सुमर सदा सुखदायी रे ।।
पारबतीने अपने अँगसे, मूरति बेश बनाई रे ।।
गणपति नाम धरा गौरीने, द्वारे दिया बिठाई रे ।।
बन कर सैर सदाशिव आये, मुखसे बोलत नाई रे ।।
तब वे कोप भये शिवशङ्कर, चक्कर सीस उड़ाई रे ।।
पारबती कहै सुनो नाथजी, गणपति देओ उठाई रे ।।
मैं परदा कर न्हावन लागी, द्वारे दिया बिठाई रे ।।
खजखंजनका शीस काटके, पूजा आदि बनाई रे ।।
वेद पुराण कथाके पहले, जो सुमरे सुखदाई रे ।।
अष्टसिद्धि नौनिद्धि लक्ष्मी, मन इच्छा फलदाई रे ।।
तुलसीदास जो गणपति सुमरे, कोटि विघ्न टल जाई रे ।।

स्तुति श्रीकृष्णजीकी।

परब्रह्म परमेश्वर अविगत, भुवन चतुर्दशनाथ हरी ।।
जब जब भीड़ पड़ी संतनपर, प्रगट हुए प्रतिपाल करी ।।
आदि अंत सबके तुम स्वामी, ब्रह्मादिक हैं अनुगामी ।।
कृष्ण नमामि नमो नमामि, दयासिंधु अंतर्यामी ।।
जाको ध्यान धरत योगीजन, शेष जपत नित नाम नये ।।
सो भवतारन दुष्ट निवारन, संतनकारन प्रगट भये ।।
जिनको नाम सुनत यम डरपे, थर थर कांपत काल हिये ।।
तिनको पकड़ नंदकी रानी, ले ऊखलसे बांध दिये ।।
जै दुखमोचन पंकजलोचन, उपमा जाय न कहत बनी ।।
जै सुखसागर सबगुन आगर, शोभा अंग अनंग घनी ।।
नारदको हम अति गुन मानैं, शाप नहीं वरदान दियो ।।
जा कारणते प्रभो आपने, दर्श दियो सन्नाथ कियो ।।
जो हरहूके ध्यान न आवत, अजर अमर हैं किहिं लेखे ।।

सो हरि प्रगट नंदके आंगन, ऊखल संग बँधे देखे ।।
जिनकी पदरजको सुर तरसे, अगम अगोचर दन जारी ।।
त्राहि त्राहि प्रणतारति भंजन, जनमनरंजन सुखकारी ।।
तुमरी माया जीव भुलानो, किहि विधि नाथ तुम्हैं जानैं ।।
तुमहीं कृपा करो जब स्वामी, तबहीं तुमको पहचानैं ।।
हे मुकुन्द मधुसूदन श्रीपति, कृपानिवास कृपा कीजै ।।
तेरे चरननमें सदा रहे मन, यह बरदान हमें दीजै ।।
जै केशव जै अधम उधारन, दया सिंधु हरि नित्य मगन ।।
जै सुन्दर ब्रजराज शशिमुख, सदा बसो मम हृदयगगन ।।
रसना नित तुमरे गुन गावै, श्रवण कथा सुन मोद भरै ।।
कर नित करें तुम्हारी सेवा, नयन संतजन दर्श करैं ।।
नेम धर्म व्रत जप तप संयम, योग यज्ञ आचार करैं ।।
नारायण बिन भक्ति न रीझैं, वेद संत सब साखि भरैं ।।

भजन

राम कहनेका मज़ा, जिसकी ज़ुबांपर आगया ।
मुक्तजीवन वो हो गया, चारों पदारथ पागया ।।१।।
लूटे मजे ध्रुव भक्तने, उस नामके परतापसे ।
सन्मुख प्रभूके जा बसा, त्रैलोक्यमें यश छागया ।।२।।
प्रहलादको लागी लगन, उस परब्रह्मके नामकी ।
नरसिंह हो दरशन दिया, हिरदे अपनेसे लगा लिया ।।३।।
जातकी मिलनी जो शबरी, प्रेमसे सुमिरन किये ।
परमात्मा घर आय उसके, हाथसों फल खागया ।।४।।
कलिकालके जो भक्त हैं, उनका तो रुतबा बड़ा ।
नरसीकी हुंडी द्वारका, वह सांवरा दिलवा गया ।।५।।
जोगी मुनीश्वर देवता, उस रूपको खोजत फिरे ।
जिसपर हुई उसकी कृपा, सतगुरु उन्हें दरसा गया ।।६।।
कपटीको मिलता है नहीं, वह नाथ सुंदर सांवरा ।
प्रेमसे जिसने जपा, दर्शन उसे दिखला गया ।।७।।
कहांतक वर्णन करूं, हरिनामके गुन काकाराम ।
अंबरके मानिंद तुलसी-दास रस बरसा गया ।।८।।

राग- भैरवी

सनातन धर्मकी जय जय, मना ले जिसका जी चाहे।
यह दुर्लभ जन्मका फल है, उठा ले जिसका जी चाहे ॥१॥
फर्ज है श्राद्ध तर्पणसे, मरे पित्रोंको खुश करना।
लिखा है वेदशास्त्रोंमें, पढ़ा ले जिसका जी चाहे ॥२॥
जो जगदीश्वरकी मूरतका, करेंगे ध्यान निश्चयसे।
वैकुण्ठमें स्थान अपना, बनाले जिसका जी चाहे ॥३॥
सनातन धर्म्मका जलसा, अगर कोई किया चाहे।
हैं हम तैयार चलनेको, बुला ले जिसका जी चाहै ॥४॥
सभा होती है रविदिनको, सनातन-धर्म्म-मन्दिरमें।
भजनका मेह बरसता है, नहा ले जिसका जी चाहे ॥५॥
धर्म्मको छोड़कर मारे, जो फिरते हैं समाजोंमें।
उन्हींका जन्म जाता है, बचा ले जिसका जी चाहे ॥६॥
अधर्म और पापके डंके, जो खुश होकर बजाते हैं।
यह नौबत चन्दरोजा है, बजा ले जिसका जी चाहे ॥७॥
जो नादानीसे भूले हैं, प्रभू से मांग ले माफी।
दयालू है वह बखशेगा, रिझा ले जिसका जी चाहे ॥८॥
जो समझायेसे ना समझे, उसे मत बोल काकाराम।
अधर्मी नाम दुनियांमें, रखा ले जिसका जी चाहे ॥९॥

भजन

जय जय युगलकिशोर बिहारी।
जय निकुंजमें अबिचल जोरी, जय मनमोहन प्रीतम प्यारी॥
जय मुखचन्द्र चकोर परस्पर, जय छबिसिंन्धु रूप मनहारी॥
जय ब्रजजीवन रसिक शिरोमणि, महिमा अमित अपार तिहारी॥
जय भक्तन वश रहत निरंतर, नाना चरित करत सुखकारी॥
भक्तराम निशिदिन यह जाँचत, चरणकमल राखो गिरिधारी॥५॥

राग- धनाश्री

सबसे ऊँची प्रेम सगाई।
दुर्योधनके मेवा त्यागे, साग विदुरघर पाई॥
जूँठे फल शबरीके खाये, बहुविधि प्रेम लगाई॥

प्रेमके वश नृप सेवा कीनी, आप बने हरि नाई।।
राजसूय यज्ञ युधिष्ठिर कीनो, तामें जूँठ उठाई।।
प्रेमके वश अर्जुनरथ हांक्यो, भूल गये ठकुराई।।
ऐसी प्रीति बढ़ी वृंदावन, गोपिन नाच नचाई।।
सूर कूर इस लायक नाहिं, कहँ लग करौं बड़ाई।।६।।

भजन

मैया मोहिं ऐसी दुलहिन भावै।
काहु गोपकी तनक ढोटनियां, रुनक झुनक चलि आवै।।
करकर पाक रसाल अपने कर, मोहिं परोसि जिमावै।।
कर अंचर पट ओट बबाते, ठाढी ब्यार ढुरावै।।
मोहि उठाय गोद बैठावे, कर मनुहार मनावै।।
अहो मेरे लाल कहो बाबाते, तेरो ब्याह करावै।।
नंदराय नँदरानी दोउ मिलि, मोदसमुद्र बढ़ावै।।
परमानंददास ठाकुर, वेद विमल यश गावै।।७।।

भजन

हरिसों लागा रह भाई, तेरी बिगडी बात बन जाई।।
ऐसा भजन करो घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई।।
सेवा बंदगी और अधीनता, सहज मिलैं रघुराई।।
दुनियां दौलत माल खजाना, बनियां बैल चलाई।।
एक बात मोंहिं लगे अचंभव, खोज खबर नहिं पाई।।
स्याही गई सफेदी आई, अब क्या करिहों भाई।।
रामनाम सुमरन नहिं कीनो, बिरथा जन्म गँवाई।।
ध्रुव प्रह्लाद नामसे तर गये, तर गये सधन कसाई।।
हरिकी सरवर कौन करैगो, नातक बात बताई।।८।।

दोहा

लज्जा तुम्हरे हाथ है, सुनो गरीबनवाज।
बिपत बिदारन सुखकरन, कर भक्तन के काज।।१।।
बस मेरा कछु ना चले, गाय सिंह ली घेर।
ठौर ठौर रक्षा करी, अब क्यों करते देर।।२।।

भजन

बिन काज आज महाराज लाज गई मेरी।
दुख हरो द्वारकानाथ शरण मैं तेरी।।
दुःशासन वंशकुठार महादुखदाई।
कर पकड़त मेरी चीर लाज नहिं आई।।
अब भयो धर्मको नाश पाप रहो छाई।
लखि अधम सभाकी ओर नारि बिखलाई।
शकुनी दुर्योधन करन खड़े खल घेरी।।दुख०।।१।।
तुम दीननकी सुधि लेत देवकीनंदन।
महिमा अनंत भगवंत भक्तदुखभंजन।।
तुम कियो सियादुख दूर शंभुधनुखंडन।
अति आरति हरण गुपाल मुनिन मनरंजन।
करुणानिधान भगवान करी क्यों देरी।।दुख०।।२।।
तुम सुन गजेंद्रकी टेर विश्व अविनासी।
ग्रह मार छुडाई बंदि काटि पगफांसी।।
मैं धरूं तिहारो ध्यान द्वारकावासी।
अब काहे राज समाज करावत हांसी।।
मम हरो पीर गंभीर जान चित चेरी।।दुख०।।३।।
तुम पति राखी प्रहलाद दीन दुख टारी।
भये खंभ फाड़ नरसिंह असुर-संहारी।।
व्रज खेलत केशी आदि बकासुर फारे।
मथुरा मुष्टिक चाणूर कंसको मारे।।
तुम मात पिताकी जाय छुड़ाई बेरी।।दुख०।।४।।
भक्तन हित लियो औतार कन्हाई तुमने।
नलकूबरकी जडयोनि छुड़ाई तुमने।।
जल बरषत प्रभुता अगम दिखाई तुमने।
नख गिरिवर धार बचायो ब्रजको तुमने।।
प्रभु अब विलंब क्यों करी हमारी बेरी।।दुख०।।५।।
बैठे अति राजसमाज नीतिको खोई।
नहिं कहत धर्मकी बात सभामें कोई।।

पांचों पति बैठे मौन कौन गति होई।
ले नंदनँदको नाम द्रौपदी रोई।।
करि करि विलाप संताप सभामें टेरी।।दुख०।।६।।
सुनि दीनबन्धु भगवान भक्तहितकारी।
भये चीररूपमें प्रगट आप बनवारी।।
खैंचत हारे मतिमंद वीर बलकारी।
रख लई दीनकी लाज आन गिरिधारी।।
हरषत बरसत सुर सुमन बजावत भेरी।।दुख०।।७।।
क्या करी द्वारकानाथ मनोहर माया।
अंबरका लगा पहाड़ पार नहिं पाया।।
तिहुँ लोक चतुर्दश भुवन चीर दरसाया।
वंदत गणेशपरसाद कृष्णगुण गाया।।
तुम दीननके हो नाथ बिपत हरी मेरी।।दुख०।।८।।९।।

राग- जंगला

श्रीरामचन्द्र दशरथके नंदन, नित पद भज मन मोरा रे।।
बालापन सब खेल गँवायो, ज्वानी जोबन जोरा रे।।
वृद्ध भयो चिंता तब उपजी, अब क्या करत निहोरा रे।।
पांचों चोर समझकर पकड़ो, चढ़ो प्रेमरस घोड़ा रे।।
ज्ञानखड्गसे मार गिरावो, यह मजुरा नर तोरा रे।।
भूला लूला कहां फिरत है, जगमें जीवन थोरा रे।।
धरे रहैं सब रंग महल तेरे, जंगल होत बसेरा रे।।
भवसागरकी धार कठिन है, वहां तोरा नहिं मोरा रे।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, समझ देख मन मोरा रे।।१०।।

राग- प्रभाती

सखा तुम बोलो न बात बिचारी।
कहौ कौनसी बाल जगतमें जैसी है भानुदुलारी।।
भानुनगरके बसनहार तुम प्यारीकी अनुहारी।।
रविशशि कोटि वदनहुकी छबि दीजै तुमपर वारी।।
कहौ कौनसे व्याह करूं मैं रची नवनविधि नारी।।

करत वास हिरदे मेरेमें कीरति कुँवरि दुलारी ।।
प्रेमविवश कछु सुरत रही ना तनुकी दशा बिसारी ।।
लिये लगाय बेग उर प्यारी तव हँसि रसिक बिहारी ।।११।।

राग- कालिंगडा

सखी तबसों चैन नहिं आवै ।

जबसों मैं निरख्यों नँदलाल, गले मोतियन माल सुहावै ।।
घुंघुरारी अलकें मुख राजैं, कोटिमदन छबि छावै ।
कुण्डल हलन चलन श्रवणनमें, बँसी मधुर बजावै ।।
सुख बुधिहरण वचन हँस बोलै, चाल मराल इतै उत डोलै ।
बजत चरन छम छननन नूपुर, ताहूपर मुसकावै ।।
कर कंकण पहुंचीमणि झलकें, देख स्वरूप लगत नहिं पलकें ।
नारायण बेसरको मोती, लटकत लिये समावै ।।१२।।

भजन

सब दिन होत न एक समान ।

इक दिन राजा हरिश्चन्द्रगृह, संपति मेरुसमान ।
इक दिन जाय श्वपचगृह सेवत, अंबर रहत मशान ।।
इक दिन दूल्हा बनत बराती, चहुँदिशि उड़त निशान ।
इक दिन डेरा होत जँगलमें, कर सूधे पग तान ।।
इक दिन सीता रुदन करत है, महाविपिन उद्यान ।
इक दिन रामचंद्र मिल दोऊ, बिचरत पुष्पविमान ।।
इक दिन राजा राजयुधिष्ठिर, अनुचर श्रीभगवान ।
इक दिन द्रौपदि नग्न होत है, चीर दुशासन तान ।।
प्रगटति है पूरबकी करनी, तज मन सोच अजान ।
सूरदास गुण कहँलग बरणै, विधिके अंक प्रमान ।।१३।।

भजन

अरजी सुनो कुँवरजी सब कथा कहुं समझाय ।।
हां प्यारे तुमवारे सतरामका नाम कि जग करता ।।
अगन चढ़े पुत्र बढ़े राम बचाव नहार कि दुखहरता ।।
कमलाकंत श्रीभगवंत नारायण चरणोंमें चित धरता ।।१४।।

गजल

छोड़के सारा वतन तू आप अकेला जायगा।।
धन माल जोड़ा है जो तैंने यह भी मोटे पापसे।
यह तेरा गोरा बदन सब खाकमें मिल जायगा।।
बालकपण लड़कनमें खोया जवानीमें सोता रहा।
अब थकेंगे प्राण तेरे खाट पड़ा पछतायगा।।
हरसे मिलनेका भी खुशदिल क्या क्या है सामां तेरा।
पार होवेगा तभी जब राधे कृष्ण गायगा।।१५।।

भजन

किसने सिखाया श्याम तुमको मीठा बोलना।
मीठी मीठी बातोंसे चितवनको चोरना।।
चीरा तो तेरा लाखका जामा करोरना।
पटकेकी सिफत क्या करूं लटका अमोलना।।
बंसीकी खटक हियमें छतियनको चोरना।
सखी प्रीत लगाके वासे नैनों निहोरना।।
कहती है श्यामा प्यारी सुनियो जी मोहना।
जब श्यामसुंदर मिल गये तो फिर क्या डोलना।।१६।।

भजन

प्रभु मोहिं ममताने घेरा, मैं कैसे गाऊं गुण तेरा।।
इस ममताके मारण कारण, यत्न किया बहुतेरा।।
तुमरी माया प्रबल है स्वामी, बस नाहीं कुछ मेरा।।
जिसपर कृपा तुम्हारी होवे, सो गावे गुण तेरा।।
तेरे विना मेरा और न कोई, तुमरे दास घनेरा।।
काकारामपर कृपा कीजो, शरण गया है तेरा।।१७।।

भजन

दिल लेके चले जाओगे, कैसे जीवेंगी हम।।
तेरी काली काली जुलफें, गोरासा है बदन।।
जब याद आवेगी तेरी, रो रो मरेंगी हम।।
हम कहती पिया तुमसे, परदेश ना गवन।।

हा हा करेंगी तेरी, पैयां पड़ेंगी हम ।।
यह छबि तिहारे मुखकी, बसी मेरे हरदम ।।
अब सूर स्वामी कृपा कीजे, दासी तेरी हम ।।१८।।

भजन

यशोदा बरज ले मोहन, हमारे डोलता गोहन ।।
चलत मग सांवरा अटके, पकड़ मेरी चरिको झटके ।।
मटकिया शीसतें पटके, दहिको खायके मटके ।।
यशोदा ऐसा सुत जाया, कि मेरे मन नहीं भाया ।।
तैंने क्या खायके जाया, सोई रसिक मन भाया ।।१९।।

भजन

रानी गजब कर डारा, बन भेजे सीताराम ।।
आगे आगे राम चलत हैं, पीछे लक्ष्मण भैया ।।
राम बिना मेरी सूनी अजुध्या, लक्ष्मण बिन ठकुरैया ।।
सीता बिन मेरी सूनी रसुइयां, यह दुख सहा न जैया ।।
सावन गरजे भादों लरजे, पवन चलत पुरवैया ।।
कौन वृक्षतले भीजत होंगे, राम लक्ष्मण दोनों भैया ।।
रावण मार राम घर आये, घर घर बजत बधैया ।।
तुलसीदास आश रघुवरकी, हरिचरणन चित लैया ।।२०।।

भजन

राधाकृष्ण भजो मन मेरे। तेरे संकट होवें दूर ।।
तू तो गाफिल मत सोवे। तेरे सिरपर आया काल ।।
माता पिता सुत भाई। आवे ना कोई काम ।।
तोकूं नारायण समझावें। पावे वृन्दावन धाम ।।२१।।

भजन

दीजो दरशन श्याम मुरारी, तेरे चरणोंपर बलिहारी।
हम सब हैं शरण तुम्हारी, करो कृपा तुम गिरिधारी ।।
हरिश्चंद्रने धर्म कमाया, तैंने खूब उसे अजमाया।
न दीनी धर्मको हार, वैकुंठ गया सिधार मुरारी ।।
जब रावणकी मौत है आई, सीताजी वनसे चुराई।

तब रावणको मार गिराया, सीताजीको वहांसे छुड़ाया।।
किया कंसने जुलम है भारी, देवकीको कैदमें डारी।
तब कृष्ण हुए औतार, कंसको मार हुए बनवारी।।
हम हरदम यही पुकारे, प्रभु काट दे कष्ट हमारे।
तेरी महिमापर जाऊं बलिहारी, मैं सौ सौ बार सुनो गिरिधारी।।२२।।

दोहा

बिना जतन मिलता नहीं, वह प्यारा महबूब।
सतगुरुकी सेवा करो, यह मारग है खूब।।१।।

भजन

हूं आशिक तेरे नाम पै, बिन मिले सबर नहिं आवै।
निराकार तेरा नाम अजर है, ऐसी क्या हम पै कड़ी नजर है।
हुकुम भेजो तो नहीं उजर हैं, चल बसे तुम्हारे धाम पै।
क्यों जगह जगह भटकावै, हूं आशिक तेरे नाम पै।।१।।
आशिक से क्यों रखते ओला, कभी तो फेर महेरका झोला।
तुमको ढूंढ़त बन बन डोला, जंगल शहर अरु ग्राम पै।
नहिं पता आपका पावै, हूं आशिक तेरे नाम पै।।२।।
आशिक निबल माशूक जबर है, मेरे हालकी तुझको खबर है।
बिन देखे नहीं जरा सबर है, मेरी अरज़ी सियाराम पै।
जो सबके न्याव चुकावै, हूं आशिक तेरे नाम पै।।३।।
दारुण बिपत जगतमें भरते, आशिक जीवन ही कुछ मरते।
बड़े कठोर दया नहिं करते, इस शंकरदास गुलाम पै।
मिल प्यारे क्यों किलसावै, हूं आशिक तेरे नाम पै।
बिन मिले सबर नहिं आवै ।।४।।२३।।

दोहा

बिन लक्ष्मी आदर नहीं, ना होता इतबार।
तेरा साथी कौन है, मात पिता सुत नार।।१।।

भजन

जिसके घरमें हो कंगाली, कोई नहीं आदर करता।।
माता पिता मित्र सुत भ्राता, सभी कहैं कुछ नहीं कमाता।

पडा अनाज हरामी खाता, देती नारि हजारों गाली।
कहीं क्यों ना जाय मरता है, जिसके घरमें हो कंगाली०।।१।।
स्त्री कहै भाग मेरा खोटा, तेरे घरमें आगया टोटा।
बेच लिया मेरा फूटा लोटा, गिरवी धर दी थाली।
नहीं तब भी पेट भरता है, जिसके घरमें हो कंगाली०।।२।।
लोग कहै मूरख नादान है, लुच्चा गुंडा बेईमान है।
सुखका साथी सभी जहान है, मिलमिल पीटें ताली।
कोई धीर नहीं धरता है,जिसके घरमें हो कंगाली०।।३।।
बहन भानजी मारे ताना, कभी न सीखे बीर कमाना।
शंकरने लिया देख जमाना, तब यह कथन निकाला।
दिल सुन सुनके डरता है, जिसके घरमें हो कंगाली०।।४।।२४।।

[१]एकश्लोकी रामायण

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं कांचनम्,
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम्।।
वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम्।
पश्चाद्रावणकुंभकर्णहननं चैतद्धि रामायणम।।१।।

[२]राममहामन्त्र

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।१।।

भजन

यह कायाकी रेल, रेलसे अजब निराली है।।
पापपुण्य दो बनाके नाली, अकल सडक ला जिसमें डाली।
मनका काँटा लगा जिधर, चाहे उधर घुमा ली है।।१।।
दया धर्मके पहिये लाके, सतका लट्ठा खूब चढ़ाके।
ज्ञान कमानी खैंच ध्यानकी संकल डाली है।।२।।
मुँहकी लाठ बनी है भारी, श्वास धुवां जिसमें है जारी।
दिलका अंजन लगा जहां झट अग्नि बाली है।।३।।

१)-यह श्लोक श्रीरामायण के पाठ के बराबर है।
२)- यह श्लोक विष्णुसहस्रनाम के पाठ के बराबर फल रखता है।

बजका घंटा हरदम हिलता, बखत रेलका जिससे मिलता।
हाथका सिगनल हिला रेल अब आनेवाली है।।४।।
जीव मुसाफिर मत दुख खेवे, रामनाम क्यों टिकट न लेवे।
कफकी घंटी बजी कूच अब करनेवाली है।।५।।
तार खबर अब हिचकी आई, काल बदरिया शिरपर छाई।
भँवर रेल गई छूठ रहा इस्टेशन खाली है।।
यह कायाकी रेल, रेलसे अजब निराली है।।६।।

भजन

क्यों हरिनाम बिसरा रे नर क्यों हरिनाम बिसरा रे।
ऐसा जन्म फेर नहिं पावे बाजी जीतके हारा रे।।
लख चौरासी भुगतके आया अब तू भज करतारा रे।
सच्चा साहिब है घटमाहीं खोलके देख किंवारा रे।।
जोती झलके अनहद गरजे गंगाकी बहै धारा रे।
कर असनान यही गंगामें जी होवे निसतारा रे।।
झूँठा जगत देखकर मोहा मनमें कुछ न विचारा रे।
घासीराम अब खोलो अँखियां देखो टुक दीदारा रे।।

भजन

तेरे तारे हरि निरंजन कौन कौन तारे।।
मथुरामें तो जन्म लीन्हा गोकुला सिधारे।
कंसका निरवंश कीन्हा संतके तुम प्यारे।।
तैंदवेको बल जो दीन्हां ऐरावत हारे।
हारके पुकार कीन्ही बाहुड बन्सीवारे।।
प्रहलाद सुदामा तारे पढ़ते इक चटसारे।
नरसी भगतकी हुंडी तारी छिनमें लिये उबारे।।
द्रौपदी चीर बढ़ाये करोड़ो कीन्हे भारे।
सूरदास बाहर ठाड़े हैं कर बेड़ेको पारे।।

भजन सोरठा

जिनकी लगन रामसों नाहीं।
बे नर खर सूकर कूकर सम वृथा जीवत जगमाहीं।।

क्या रे भया बड़े कुलमें उपजो शील नहीं घटमाहीं।।
अमृत छोड़ विषयरस पीवत धिक् धिक् उनके ताही।।
जैसे फूल आषाढ़में फूलैं विन स्वारथ झड़ जाहीं।।
भवसागर बिच बहा जात हूं राखे खैंच बाही।।
कड़वी बेलकी कड़वी तुंबडियां सब तीरथ कर आई।।
श्रीजगन्नाथके दर्शन करके तो भी ना गई कड़वाई।।

भजन

माया काहूकी न भई रे, माया काहूकी न भई रे ।।
सतयुगमें हिरनाकुश राजा, चारों जीत लई रे ।।
हातमें खड़ग महाबल जोधा, उनके संग ना गई रे ।।
त्रेतामें रावण भये राजा, लंकाराज सही रे ।।
एक लख पूत सवालख नाती, लकडी किसी ना दई रे ।।
द्वापर दुर्योधन भयो राजा, पांडूराज सही रे ।।
बारह योजन छत्तर झूलत, देही सँग न गई रे ।।
द्वापर अंत कृष्ण भये राजा, कंसको राज सही रे ।।
कंसको मार उडन्त कियो प्रभु, गोपी ब्याकुल भई रे ।।
सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग, चारों जुग्ग सही रे ।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, मेरी मेरी कही रे ।।

भजन

जो जन ऊधो मोहि ना बिसारे ।।
मैं ना बिसारूं छिन एक घड़ी रे।।
जो मोहि भजै भजूं मैं वाको, सुख राखूं आनन्दघडी रे।।
जन्म जन्मके फंदे काटूं, दे डारूं वैकुंठपुरी रे।।
दुर्वासा अंबरीष घर आये, चक्रसुदर्शन रक्षा करी रे।।
भारतमें भँवरीके अंडे, राख लिये गजघंट धरी रे।।
ध्रुव प्रहलाद रैनदिन ध्याये, गुप्त हुए तैं प्रगट करी रे।।
भरी सभामें द्रुपदसुताको, चीर दिये जगदीश हरी रे।।
खंभ फोड़ हिरनाकुश माऱ्यो, भक्त प्रहलादकी रक्षा करी रे।।
सूरदास गजराज उबाऱ्यो, जगन्नाथ जगदीश हरी रे।।

भजन

हम भगतनके भगत हमारे, हम भगतन के भगत हमारे ।।
सुन अर्जुन प्रतिज्ञा मेरी, यह व्रत टरत न टारे ।।
भक्तनकाज लाज अपनीको, पाँव पियादे धाऊं रे ।।
जहां जहां भीड़ पड़ै संतनपर, तहां तहां उठ जाऊं रे ।।
जो मम भक्तन वैर करत है, सो जन वैरी मेरो रे ।।
देख विचार भक्तहितकारन, रथ हांकत हूं तेरो रे ।।
जीते जीत भगत अपनेकी, हारे हार बचाऊं रे ।।
सूरदास जो भक्तद्रोही, चक्र सुदर्शन मारूं रे ।।

भजन

हम आये कृष्ण तेरी शरना।
नहीं जानत कुछ करना। जप तप संयम नहिं ज्ञाना।
ना कीनो कुछ हरिजी दाना। भरा लोभ मोह अभिमाना।
एक कियो उदरको भरना। हम आये कृष्ण तेरी शरना ।।१।।
ना कीनी सुफल कमाई। ना सीखी कुछ चतुराई।
ना सतसंगत प्रीत लगाई। विषयनमें उमर गँवाई।
ना काज अकाज विचारो। दिन रैन रहूँ मतवारो।
ना कीनो परउपकारो। नित कीनो पाप हजारो।
भवसागर किस विधि तरना। हम आये कृष्ण तेरी शरना ।।२।।
कहे सूर अधम कर जोरी। तुम सुनियो युगलकिशोरी।
मैं लीला गाऊं तेरी। तुम लज्जा राखो मेरी।
अब लियो तुम्हारो चरना। हम आये कृष्ण तेरी शरना ।।३।।

भजन

हीरा रे जन्म तैंने खोया जगमें आयके।।
एक जो दाता गौवैं देते सोने सींग मढायके।।
पापी दुष्टी चुगली खावें काके द्वारे जायके।।
एक जो दाता भोजन कराते खाँड खीर मिलायके।।
साधू खावें रूखी सूखी ठाकुर भोग लगायके।।
बाबू ओढ़ें शालदुशाले तकियां लिहाफ लगायके।।

साधूकी यह चाल निराली बैठा धूनी लायके।।
जो संतनकी शरना आवे पूरण उनके भाग रे।।
तुलसीदास आस रघुवरकी गावें प्रभुके दास रे।।

भजन

नाम जपन क्यों छोड़ दिया?।।
क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा, सत्यवचन क्यों छोड़ दिया?।।ध्रु०।।
झूँठे जगमें दिल ललचाकर, असल वतन क्यों छोड़ दिया?।।
कौड़ी को तो खूब सम्हाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया?।।१।।
जिहि सुमिरन ते अति सुख पावे, सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया?।।
खालस इक भगवान भरोसे, तन मन धन क्यों न छोड़ दिया?।।२।।

राग कान्हरा

तुम मेरी राखो लाज हरी।
तुम जानत सब अंतरजामी, करनी कछु न करी।।
औगुन मोते बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी।
सब प्रपंचकी पोट बाँधि कै, अपने सीस धरी।।
दारा सुत धन मोह लिये हैं सुधि बुधि सब बिसरी।
सूर पतित को बेग उधारो, अब मेरी नाव भरी।।

ठुमरी

अरे मन समझ समझ पग धरिये।
इस जगमें अपना ना कोई परछायेसे डरिये।।
दौलत दुनियां कुटुँब कबीला इनसों नेह न करिये।
रामनाम सुखधाम जगत्पति सुमर वेग जासों तरिये।।

भजन

सब सुख रामनाम लौलाये नाम विना सुख सकल वृथा ये।।
ना सुख होता मूँड मुँडाए, ना सुख घर घर अलख जगाये।
ना सुख है अपने घरमाहीं, ना सुख भगवा भेष बनाये।।
ना सुख वनमें ना सुख धनमें, ना सुख चिन्ता ना हर्षाये।
ना सुख जोग जज्ञ तप पूजा, ना सुख झूँठी समाधि लगाये।।
ना सुख राजा ना सुख रानी, ना सुख हासविलास कहानी।
ना सुख मानी ना अभिमानी, ना सुख झूँठी कर चतुराई।।

ना सुख वेद किताब पुराना, ना सुख हरीकथा और ज्ञाना।
सगरे सुख कबिराने पाये, रामनाम जिन मनमें बसाये।।

राग टोडी

राम सुमर राम सुमर यही तेरो काज है।।
मायाको संग त्याग, प्रभुजीकी शरण लाग।
जगत सुख मान मिथ्या, झूँठो सब साज है।।१।।
सुपने ज्यों धन पिछान, काहे पर करत मान।
बालूकी भीत जैसे, वसुधा को राज है।।२।।
नानक जन कहत बात, बिनशि जाय तेरो गात।
छिन छिन कर गयो काल, तैसे जात आज है।।३।।

राग आसावरी

सुमर सुमर हरिनाम रे।।
गाफिल वृथा तेरी उमर गुजर गई,जबलग था मूढ समझ नहीं आई।
बाल अवस्था यूंही गवाँई, खेलत ही तेरी शाम सुबह गई।
भूल गयो निज काम रे,सुमर सुमर हरिनाम रे ।।१।।
पुनि जोबन विषयों ने घेरा, छाया हुआ जिनका तुझपै अंधेरा।
मस्तीमें कहता तू मेरा मेरा, ना जपा मुखसे राम रे।
इश्क भरी तेरी दृष्टि जिधर गई, सुमर सुमर हरिनाम रे ।।२।।
करता नजारा फँसा मोहमें कैदी, मिट गई स्याही और आगई सफेदी।
अब तो हुई मूढ यह नाउमेदी, तज लोभ मोह क्रोध काम रे।
अहंकारमें तेरी नाहक कदर गई, सुमर सुमर हरिनाम रे ।।३।।
कदर है उनको जो नामके रंगमें, भीगे हैं निस दिन सतसंगमें।
प्रेम रचा जिनके अंग अंगमें, पावैंगे वैकुंठ धाम रे।
गंगाविष्णु तेरी सुधहु बिसर गई,सुमर सुमर हरिनाम रे ।।४।।

भजन

पी ले रे प्याला हो मतवाला प्याला प्रेमहरी रसका रे।।
बालापन लड़कनमें खोया, ज्वान भया नारी बसका रे।
वृद्ध भया कफ वायुने घेरा, खाट पड़ा ना जा खसकारे।।
पापपुण्य दो भुगतन आया, कौन तेरा तू है किसका रे।

जो दम जीवै हरिगुण गाले, धन जोबन सुपना निसकार रे।।
नाभिकमलमें है कस्तूरी, कैसे भरम मिटै पशुका रे।
बिन सतगुरु नर ऐसा डोले, जैसे मिरग फिरे वनका रे।।
लख चौरासी बचना चाहे, छोड़ कामनीका चसका रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, इस जगमें कोई ना अपना रे।।

भजन

कर सुमरन मन रामनाम, दिन नीके बीते जाते हैं।।
जैसा लागे मीठा बतासा, मूरख फँसा मोहकी फांसा।
क्या राखें सांसोंकी आसा, गये लौट नहीं आते हैं।।कर०।।
पुत्र कलत्र सकल परिवारा, किसके तुम हो कौन तुम्हारा।
जिसके बल हरिनाम बिसारा, सब सुख देखनके नाते हैं।।कर०।।
लख चौरासी भोग गवाँयो, बड़े भाग मानुष तन पायो।
बालापन हँस खेल गँवायो, अब समझ सोच पछताते हैं।।कर०।।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, जोड़ जमी धर जाते हैं।
तुलसी वह नर चतुर कहावैं, जो खाते और खिलाते हैं।।कर०।।

भजन

सौदागर हारे जाते हैं माल जिन्होंने जमा किया।।
भाई बन्धु और कुटुँब कबीला दावा करके खाते हैं।।
जब ये मुसाफिर मारा जावे सभी अलग हो जाते हैं।।
अग्नि पलीता राजदंड अरु चौर मूस ले जाते हैं।।
रामनाम पै कोई ना देवे माल जमाई खाते हैं।।
ऊंचे नीचे महल बनाये बैठ रहे चौबारे हैं।।
जागते रहना सोना नाहीं हाथ पसारे जाते हैं।।
भाई बन्धु संबंधी सारे जलदी कर ले जाते हैं।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अपने हाथ जलाते हैं।।

राग कालिंगड़ा

सुन लीजो विनती मेरी, मैं शरण आया प्रभु तेरी।।टेक।।
कितने तैं पतित उधारे, भवसागर पार उतारे।
मैं सबका नाम न जानूं, मैं कोई कोई बखानूं।।सु०।।१।।

अम्बरीष सुदामा नामा, तैं पहुंचा दिये निजधामा।
जब पांच बरस ध्रुवबाला, तब दर्शन दियो नंदलाला।।सु०।।२।।
प्रह्लाद टेक तैं राखी, यह जानत हैं सब साखी।
शबरीके फल तैं खाये, तिरलोचनके गृह आये।।सु०।।३।।
कबिराके बालद लाये, तुम काज किये मन भाये।
गज ग्राहतैं आय छुड़ाये, अब मोकूं क्यों बिसराये।।सु०।।४।।
पांडवनकी करी सहाई, द्रौपदीकी लाज रखाई।
धन्नाको खेत उपजायो, तैं साग विदुर घर खायो।।सु०।।५।।
मीरा तेरे रंग भीनी, नरसीकी हुण्डी लीनी।
गनका तैं पार लगाई, कर्माकी खिचड़ी खाई।।सु०।।६।।
मोहि काम क्रोधने घेरा, ममताने किया अँधेरा।
मैं लोभकी फंदी पड़िया, तेरा नाम बिसर दुख फडिया।।सु०।।७।।
सनकादिक विरँचि ध्यावें, तेरा शेष पार नहिं पावैं।
चरनदास पै किरपा कीजो, मोहिं भक्तिदान वर दीजो।।सु०।।८।।

भजन

बिना रघुनाथके देखे नहिं दिलको करारी है।।
हमारी मातकी करनी सकल दुनियाँ से न्यारी है।
बेमुखड़ा रामसों कीनों यही जननी हमारी है।।
लगी रघुवंशमें अग्नि अवध सारी उजारी है।
भरतजी लौटें धरनी पै कर्ताने क्या बिचारी है।।
नहीं मैं राजका भूखा फजर चलनेकी त्यारी है।
सुना एक तातका मरना जिगर बर्छीसी मारी है।।
पड़ा व्याकुल हुआ बेसुध नैंनोंसे नीर जारी है।
पड़ा सियारामके चरनन यही तुलसी विचारी है।।

राग देस

राधेकृष्ण क्यों नहीं जपते पीछे पछताओगे।।
जाने तोको जन्म दियो ताको नाम क्यों ना लिये।
यह तो मानुष देही बंदे फेर नहीं पावोगे।।
तिरिया अरु कुटुंबके खातर पच पचके कमाओगे।

माया तेरे सँग ना चालै भरम गमाओगे।।
आवैंगे वे यमके दूत पकड़ ले जावेंगे।
तुमसे मागेंगे हिसाब प्यारे क्या बतलाओगे।।
सूर प्रभु शरण आयो आवागमन मिटाओगे।
श्रीठाकुरको ध्यान धर ले पार लँघ जाओगे।।

राग देस

नाथ कैसे गजके फंद छुड़ाये।
हँस पूँछै जनकपुरकी नारी तिहारो यही अचरज मन भाये ।।ध्रु०।।
गज और ग्राह लड़े जल भीतर दारुण रुदन मचाये।।
गजकी टेर सुनी रघुनन्दन गरुड़ छोड़ उठ धाये।।१।।
भीलनीके बेर सुदामाके तन्दुल रुच रुच भोग लगाये।
दुर्योधनके मेवा त्यागे साग विदुर घर खाये।।२।।
इन्द्रने कोप कियो व्रज ऊपर छिनमें वारि बहाये।
गोवर्द्धन स्वामी नखपर लीनो इन्द्रको मान घटाये।।३।।
अर्जुनके स्वारथ रथ हांक्यो महाभारत गुण गाये।
भारतमें भवरीके अंडा घंटा तोड़ बचाये।।४।।
ले प्रह्लाद खंभसे बाँध्यो राजन त्रास दिखाये।
जन अपनेकी प्रतिज्ञा राखी नरसिंह रूप बनाये।।५।।
छोड़े न छूटे सियाजीको कंगना कैसे चाप चढ़ाये।
कोमल गात अंग अति नीके देखत मनहिं लुभाये।।६।।
जहां जहां भीड़ पड़ी संतन पै तहां तहां होत सहाये।
तुलसीदास सेवक रघुनंदन आनँद मंगल गाये।।७।।

राग खमाज

हरि हम पाप कियो भारी, तुम्हारा नाम पापहारी।।
बड़ो मैं पतितनमें नामी, कुटिल जगनिन्दक शठगामी।
बड़ो मैं दुष्टनमें राजा, करो नित उदर हेत काजा।
दो०- सात द्वीप नौ खंडमें, अतिनीचनमें नीच।।
विषयकीचमें धस रह्यो, भवसागरके बीच।।
लगा चित परधन परनारी, हरि हम पाप कियो भारी० ।।१।।

किये सब झूठे ब्यौहारा, कि पाले कुल कुटुंब दारा।
कहायो कुशल कर्म दानी, महामूरख मैं अज्ञानी।
दो०-एक घड़ी ना चेतियो, लियो न तेरो नाम॥
निन्दा चरचा कर दिन बीत्यो, बीते आठों जाम॥
रहा धन जो बन हंकारी, हरि हम पाप कियो भारी० ॥२॥
अजामिल पाप बहुत कीने, कामिनी कामरंग भीने।
कीनो नित उलटा सँगबासा, कियो नित धर्मकर्म नाशा।
दो०- हिरनाकुश प्रहलादके, मरन हेत कियो काज॥
खंभ फोड़ प्रभु नरसिंह प्रगटे, राखी जनकी लाज॥
भगतकी पीर हरी सारी, हरि हम पाप कियो भारी० ॥३॥
प्रभु तुम कुंजरपति राखी, तुम्हारा नाम जभी भाखी।
दौपदीकी लाज तुम राखी, चीरसों नग्न नहिं राखी।
दो०- इंदर कोप कियो व्रज ऊपर, बरसो पत्थर सार॥
सारे व्रजको राख लियो प्रभु, नखपर गिरिवर धार॥
नाम तेरो पड़्यो है गिरिधारी, हरि हम पाप कियो भारी० ॥४॥
सोई नर नरककुंड पड़ते, जोई तेरी भक्ति नहीं करते।
सोई नर खर सूकर माना, जिन्होंने तेरा नाम नहीं जाना।
दो०- रातदिना अन्ध घोरमें, पड़े रहत अज्ञात॥
मान लोभ मद मोहमें, तेरो जन्म अकारथ जात॥
पापकी करमरेख न्यारी, हरि हम पाप कियो भारी० ॥५॥
गोपकी नारी अतिबीना, जोग जप संयम नहिं कीना।
पढ़ी नहिं वेदशास्त्रपोथी, दान तप तीरथ सों थोथी।
दो०- एक तिहारे प्रेमसे, भईं तिहारो रूप॥
सूर अधमको पार उतारो, पड़ा अवज्ञा कूप॥
सदा प्रभु संतन हितकारी, हरि हम पाप कियो भारी० ॥६॥

भजन

जिनके हिरदे हरिनाम बसे, उन औरको नाम लियो न लियो॥
जिनके घरमें है कन्या क्वाँरी, उन औरको दान दियो न दियो॥
जिनके घरमें हैं माता पिता, उन तीर्थस्नान कियो न कियो॥

जिनके घरमें होवें पुत्र सुपुत्र, उन कुलका तार कियो न कियो।।
जिनके हिरदे हरिनाम बसे, उन औरको नाम लियो न लियो।।

भजन

अँखियां मोहनकी बिन देखे रहा न जाय।।
काजर नयन किरकिरा लागै सूरमा नहीं सुहाय।
जिन अँखियोंमें श्याम बिराजे दूसरा कोई न समाय।।
आँगन मोरे आयके लाला गगरी लेत उठाय।
औरके डरसे मानत नाहीं मात यशोदा डरपाय।।
आँगन मोरे आयके लाला बंसी नेक बजाय।
बंसरीवाला मोहन कहिये ले गया चित्त चुराय।।
मेरे जियामें ऐसी आवे यमुना डूब मरूं जाय।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको हरिसों हेत लगाय।।१।।

सोरठा

मैंने देखी री आज मोहनकी हँसन
अधरन पै अद्भुत अरुणाई, मोतियनकी लड़ पांति दसन।।
वा शोभाके नयना प्यासे, पीवन लगे भर भरके पसन।।
नारायण तबसे मोहिं सजनी, सुध न रही निज वदन बसन।।

भजन

तू गरीबको निवाज मैं गरीब तेरा।
ध्याऊं तुझे बाद कौन तू अधार मेरा।।
मन मलीन अति कुचाल मरम कैसे जानूं।
तुम समान गुणनिधान और कहा बखानूं।।
अंदर मोरे खोट कपट एक पल न ध्याऊं।
भाव विना भगति नाहिं मुक्ति कैसे पाऊँ।।
अपना प्रताप जान भक्ति दीजो राया।
सूरदास जन्मअंध शरण तेरी आया।।

गजल

श्यामकी ऊधो जुदाई अब सही जाती नहीं।
न दिनको चैन है रातको आँखोंमें नींद आती नहीं।।

बेवफा हमसों खफा हो जा दिया सौतनको दिल।
क्या खता मेरी खबर भेजी कोई पाती नहीं।।
दिल दिया गैरोंको हरदम गम दिया हमको सनम।
अब तो कोई मिलनेकी सूरत हमको दिखलाती नहीं।।
माखन व मिसरी छोड़कर वह गये पीनेको छाछ।
ताब जुगनूकी कभी महताबको पाती नहीं।।
उनकी उलफतमें हमेशा गोपियां गाती थीं राग।
वह गये जबसे कहीं गाती हैं परभाती नहीं।।
कानमें कुंडल गले सेली मलें तनपै विभूत।
होवें हम जोगिन उन्हें कहते शरम आती नहीं।।
मारकर आसन ले माला करें कुंजनमें भजन।
यह सखुन लिखते जरा तबियत तरस खाती नहीं।।
आइये गोकुल मनोहर आरजू करते गणेश।
हे सखी दाना कोई हमदम को समझाती नहीं।।

रेखता

कीजे गवन भवनमें वृषभानुकी दुलारी।
देखो बहार कैसी बड़े गोपकी कुमारी।।
फूले गुलाब चंपा केसरी फूली क्यारी।
सुंदर खिली चँबेली गेंदा खिले हजारी।।
चहुँओर मोर बोलैं कोयलकी कूक प्यारी।
पहरो सम्हार भूषण ओढ़ो सुरंग सारी।।
जलदी चलो किशोरी अरजी यही हमारी।
माखनको चोर ठाड़ो विनती करै तिहारी।।

भजन

जिन हरि पायो ऊधो प्रेमहीसे पायो है।
प्रेम विना कुछ हाथ नाहीं आयो है।।
घस घस चन्दन मधुसूदन लगायो है।
सब गोपियोंको प्रेम एक कूबड़ीने पायो है।।
मुखमें जो बान पड़े हरिनाम लेनेकी।

यही रामनाम सूआ गनिका पढ़ायो है।।
तुम जो कहत ऊधो प्रेम छोड़ योग लीजो।
प्रेमकी जो घाट पड़ी योगको बढ़ायो है।।
सूरके स्वामीको संदेशो जाके कहियो ऊधो।
तुम पठयो योग असां पानी में बहायो है।।

राग विभास

मेरी तो जीवन राधा बिन देखे ना आवे चैन।।
मोसे तो कुछ चूक परी ना कैसे रूठी सुख दैन।।
पैयां परू मैं तोरे ललिता विशाखा तोरे,
नेक जाओ राधा लैन ।। धीरज
श्रीराधाजूके देखे शीतल होंगे मेरे नैन।।मेरी तो०।।

मलार

प्रीतम तुम मोहि प्राणसे प्यारो।
जो तोहि देखे हिये सुख पावत सो बड़ भागन वारो।।
तुम जीवन धन सरबस तुम ही तुम ही दृगनको तारो।
जो तुमको पलभर न निहारूं दीखत सब अंधियारो।।
मोद बढ़ावनके कारण हम मानिनी रूपको धारो।
नारायण हम दोनों एक हैं फल सुगन्ध ना न्यारो।।

राग भूपाली

विनती कुँवर किशोरी मेरी मान मान मान।
बिन चूक मोते मानकी मत ठान ठान ठान।।
काहेको बैठी श्यामा भौंहें तान तान तान।
तूहीं तो मेरे जीवन धन प्रान प्रान प्रान।।
मेरे हियेकी पीरको तू जान जान जान।
जन जान रसिक लीजै दान दान दान।।

रेखता

यमुना नदीके तीर री एक सांवरा खड़ा।।
वाके अनद बदनमें मेरा तो मन लगा।।
पहरे बसन बसंती करमें कड़ा पड़ा।।

मोतियनकी माला गल चौलड़ा पड़ा।।
माथेपै क्रीट झलके मणियोंसे यह जड़ा।।
मैं क्या करूं बड़ाई री भली भांतिसे बना।।
जुगलदास आस करके द्वारे मेरे खड़ा।।
मैं टार टार हारी टारे नहीं टरा।।

राग देस

तोहि डगर चलत कहा भयो री वीर।।
कहूं पगकी पायल कहूं शिरको चीर।
भई बावरी न कुछ सुध बुध है शरीर।।
तेरे मतवारन सम झूमत नयन।
मुख भाषत है तूँ अति विरह बयन।।
मोसों नारायण जिन जिन रख दुराय।
जो तू कहेगी सोई मैं तेरो करूं उपाय।।
मानों घायल काहूने करी दृगन तीर।
जासों रोगहू घटे हटे सकल पीर।।

राग सोरठा

मेरी लाज तुमको सुनियो जी महाराज सांवरे।।
बंगुरी पकड़ मेरा अँचरा झटकत पड़ी धरनपै लोटूं।।
दुष्ट सभा जो पापी राजा नगन करत है मोकूं।।
कौरव पांडव सभी सुनत हैं कोई नहिं बरजत वाको।।
अर्जुन भीम महाबल जोधा कोई ना छुड़ावत मोको।।
सूरदास मैं सिंहकी शरण हूँ चरणोंमें राखो मोको।।
मेरी लाज तुमको सुनियो जी महाराज सांवरे।।

राग टोड़ी

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई।।
हँस हँस मुख मोर मोर गागर छिटकाई।।
घूँघट पट खोल खोल सांवरो कन्हाई।।
यशुमति तैं भली बात लालको सिखाई।।
अगर बगर झगर करत रारि तो मचाई।।

हौं तो बीर जमुनातीर नीर भरन धाई।।
गिरिधरके चरण ऊपर मीराँ बलि जाई।।

रेखता

नाचत छैल छबीलो नन्दको कुमार है।।
गलबांहि दे प्रियाको सुन्दर शृँगार है।।
इत मंद मंद झीनी नूपुर आवाज है।।
उत पायजेब पायल घनकीसी गाज है।।
पगिया लसी कुँवरके शिरपेंच लाल है।।
भ्रुकुटी लगी ललोई प्यारीके भाल है।।
कटि काछिनी मुचोली पटुका किनारिका।।
दामन सुरंगी सेला कीतिकुमारिका।।
कानों जड़ाऊ झूमका गल हीराहार है।।
मोतियनकी माला सुन्दर शोभा अपार है।।
गुंजा गले गुनी के तर गुंजमाल है।।
छतिया लगी लालासों बंसी रसाल है।।
नासा बुलाक बेसर माथेपै मुकुट सोहे।।
प्यारीके नख छटापर रवि चंद्र कोटि मोहे।।
दोनों झुके परस्पर छबि बेशुमार है।।
केशव खड़ा विलोकै प्राणन अधार है।।

लावनी

साँवरे शरणागत तेरी। इंद्रने आय व्रज घेरी।
देखोजी यह बादल मिल आये।
दामनी दमकत झर लाये।
भाग अब कहो कित जावैं।।
मेघ प्रलयका बरसावैं।।
दो०-कहो गी अब कैसे बनै, पड़्यो इंद्र सों बैर।।
कोप्यो है पृथ्वीको पालक, होगी किसविध खैर।।
जुगत हम तुमरी हेरी।। सांवरे शरणागत तेरी०।।१।।
कहीं हम तुमरी सब मानी, भेंट गिरिवरकी मन ठानी।।
इंद्रकी झूँठ सभी जानी, लखी हम तुमरी नादानी।।

दो०-गोकुलराजा नंदजू, जा घर कुंवर कन्हाय॥
मिथ्या वचन अब होत तिहारो,जनकी करो सहाय॥
जतनमें नहिं लाओ देरी॥ सांवरे शरणागत तेरी०॥२॥
कहत हम तुमरे गुण भारी, पूतना बालकपन मारी॥
दुष्टनी माया विस्तारी, बनी सो सुंदरसी नारी॥
दो०- कुचमें जहर लगायके, दियो कृष्णमुख माहँ॥
एक मासको रूप तिहारो, जीवत छोड़ी नाह॥
मारकर मारगमें गेरी॥ साँवरे शरणागत तेरी०॥३॥
निर्मल जल यमुनाको कियो, तुरत ही दावानल पियो॥
अभय व्रजवासिनको दियो, खैंच मन सबका हरि लियो॥
दो०-व्रज तेरेको सांवरे, करे इंद्र बेहाल॥
अबके सहाय करो नँदनंदन, करुणासिंधु गुपाल॥
शरण यह व्रजमंडल तेरी॥ साँवरे शरणागत तेरी०॥४॥
अधर हरि आपन मुसकाये, वचन यह मुखतें बतलाये॥
कहो तुम यहां कैसे आये, सभी मिल गिरिवरपै धाये॥
दोहा०-नखपर गिरिवर धारके, कियो कृष्णने खेल॥
गोवर्द्धन के शीशपर, सो जिन दियो सुदर्शन मेल॥
अधर धर बंसीको टेरी॥ साँवरे शरणागत तेरी०॥५॥
सोहै शिर पँचरंगी चीरा, रच्यो मुख पाननको बीरा॥
गले मोतिनकी माल हीरा, सोहै कटिपीतांबर पीरा॥
दोहा०-सात कोसके बीचमें, गोवर्द्धन विस्तार॥
सात वर्षको रूप हरि, लियो पुष्प जिमि धार॥
अशीश दे रही व्रज सारी॥ साँवरे शरणागत तेरी०॥६॥
इंद्रजी कोपि कोपि गरजे, नहीं जल गिरवरपै सरजे॥
दामनी घनघनमें चमके, कि मूशलधारनसों ठमके॥
दो०-वर्ष वर्षके हारियो, तब जान्यो जगदीश॥
दोनों हाथ पसारके, धर्यो चरणमें शीश॥
बुद्धि मेरी मायाने फेरी॥ साँवरे शरणागत तेरी०॥७॥
अचंभो याको कुछ नाहीं, इंद्र तो लाख कोटि ताहिं॥
बनावत पल छिनके माहीं, बिगारत देर कछु नाहीं॥

दो०-उत्पति परलै जगतकी, गिरधारीको ख्याल॥
गंगाधर ब्रह्मा शिव ध्यावे, इंद्र बिचारो बाल॥
नामते काटो मम वेरी॥ साँवरे शरणागत तेरी०॥८॥

भजन

मदभरे नैन रसीले री मालिन मदभरे नैन रसीले॥
कहा नाम है तात तिहारो कहा तिहारर माई॥
कहा मन्दरी नाम तिहारो कौन ग्रामते आई री॥
अचल प्रेम है तात हमारो भक्ति हमारी माई॥
श्याम सखी है नाम हमारो धुर गोकुलते आई री॥
तेरो रूप देख मन मोहा सुन मालिनकी जाई॥
हम लेवेंगी सब वस्तु तिहारी और कहो क्या लाई री॥
चंपाकली अरु राय चमेली फूलन हार बनाई॥
सेवतीफूल सुमनका छुमना तिहारे कारण लाई रे॥
कित गोकुल कित मथुरा नगरी कित बरसाने आई॥
कौन बतायो नाम हमारो किन यह ठौर बताई री॥
तीन भुवनमें सुयश प्रगट है और तुम्हरी ठकुराई॥
राधे रूप नामकी राशी श्रीवृषभानुकी जाई री॥
चंचल चतुर सुघर तू मालिन हम जानी चतुराई॥
फूलन हार बने अति सुंदर और कहो क्या लाई री॥
सुंदर तेल फुलेल उबटनो अतर सुगंध मलाई॥
मन भावे सो ले मेरी सजनी देर भई मोहि आई री॥
देर देर तू मत कर मालिन दूंगी माल अघाई॥
हीरा रतन लाला मणि मानक भूषण बसन मँगाई री॥
मैं मालिन हूं बड़े घरनकी धनकी रुचि कछु नांई॥
हम सौदागर प्रेमरतनके और न कछू सुहाई री॥
तेल फुलेलकी बेचनहारी कहा अधिक इतराई॥
लेहु लेहु करती कुंजनमें हमपै करत बड़ाई री॥
सुकृत जन्मके फलते भामिनि यह मेरे फूल सुहाई॥
पच पच हार रहे सुर नर मुनि ऐसे फूल न पाई री॥

जिन फूलनको खोज थकित भये सुरनरपति मुनिराई।।
ऐसे फूल कहो मृगनयनी कौन बागसे लाई री।।
त्रिभुवनपति जगदीश दयानिधि नंदकुँवर यदुराई।।
वा मोहनके बागसे प्यारी नवल फूल चुन लाई री।।
यह सुनके वृषभानुनंदिनी तन मन सुख अधिकाई।।
आजकी रैन रहो घर हमरे भोर भये उठ जाई री।।
साँची प्रीति देख प्यारी की रैन रैन ठहराई।।
यह छबि निरख मगन भये सुरनर दास चरणबलि जाई री।।

राग गौरी

बृन्दावनके राजा दोऊ श्याम राधिका रानी।।
चार पदारथ करत मजूरी मुक्ति भरे जहां पानी।।
कर्म धर्म जहां बटें जेवड़ी घर छाये ब्रह्मज्ञानी।।
योगी यती सती संन्यासी तिनहू नेक न जानी।।
चारों वेद पुराण लगनियां गावत सगुण या बानी।।
घर घर प्रेम भगतिकी महिमा शंकरदयाल बखानी।।

राग बिहाग

आज बनवारी बने मुरारी सखी कुंजबिहारी।।
संग सोवे राधा प्यारी वृषभानुकी दुलारी।।
दोनों मिलकर नृत्य करत हैं राधा और गिरिधारी।।
आज बनवारी बने मुरारी सखी कुंजबिहारी।।१।।
मोर मुकुटधारी चन्दनकी खौर न्यारी।।
भ्रुकुटी कुटिल अलकें घूंघरवारी।। आज०।।२।।
टेढ़ी चितवन प्यारी नासिका मोती सँवारी।।
मुरली अधर मुख सुरन उचारी।। आज०।।३।।
मोह लीनी व्रजनारी देखके यह छबि न्यारी।।
माया सखी पाँव पड़ लीनी बलिहारी।। आज०।।४।।

ठुमरी

पिया तेरी साँवरी सूरतपै वारी रे।
बतियां करत मानों फूलसे झरत मुख, अलक दोऊ सुघरारी रे ॥
बांकी चितवन मृदु हँसन दशन छवि भृकुटि कुटिल लागे प्यारी रे॥
कर धर कटि जो अदासे नारायण, ठाढ़ो पकड़ द्रुमडारी रे ॥पिया०॥

रेखता

इस नंदके फरजन्दने बाँकी अदा धरी॥
भौंहें कमान झुक रहीं गोशेसे आ मिली॥
तिरछा मुकुट धर शीसपै मुरली अधर धरी॥
काननमें कुंडल झलकते गले मोतियां लड़ी॥
चितवन जो तेरी भाला जिसने घायल मोहिं करा॥
सिर मुकुट सोहे मोरका और पाग जरकसी॥
अब सूर कहें श्यामसे धन आगकी घड़ी॥

भजन

अटकी मेरी जान बांके बिहारीसों अटकी॥
मोर मुकुट मकराकृति कुंडल ऊपर कलँगी लटकी॥
बिना गोपाललाल मोरी सजनी को जाने मेरे घटकी॥
श्यामसखा बिसरत नाहीं पल छिन सूरत नागरनटकी॥

जैजैवंती

आज सखी प्रीतम जो पाऊं तो अपने बड़े भाग मनाऊं॥टेक॥
सांवरी सूरत नैन विशाला, चन्द्रवदन गल मोतियन माला॥
रूप मनोहर चाल मराला, सुन्दरतापर बलि बलि जाऊं॥१॥
जो प्यारा इन गलियन आवै, मो विरहिनको दरश दिखावै॥
बैठ निकट मृदु वचन सुनावै, मैं उनको हँस कंठ लगाऊं॥२॥
नारायण जीवन गिरिधारी, कब लेंगे सुध आय हमारी॥
जब मोसों वह कहैंगे प्यारी, मैं फूली अंग नाहिं समाऊं॥३॥

भजन

मनुवा मैं वार डारूंगी अपने को श्यामसुंदरपर आज॥
मोर मुकुट पीतांबर साजे, कोटिकाम छबि निरखत लाजे॥

कर कंगन पग नूपुर बाजे, निरत करो महाराज।। मनुवा०।।१।।
सांवला रंग सलोनी अँखिया, नाचत श्याम नचावत सखियां।।
मोह लिये सुर नर पँखिया, नीको साज समाज ।। मनुवा०।।२।।
मोर मुकुट माथे राजत हीरा, शिर सोहै पचरंगी चीरा।।
मोह लिये सब नागर वीरा, संतनको शिरताज ।। मनुवा०।।३।।
कृष्णदासपर किरपा कीजै, बंसी बजाय मगन कर लीजै।।
नन्दनँदन पियाके रस भीनी दर्शन दो महाराज ।। मनुवा०।।४।।

राग पहाडी

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई।।
जाके शिर मोरमुकुट मेरा पति सोई।
शंख चक्र गदा पद्म कंठमाला सोई।। मेरे०।।१।।
मैं अपना पिया देख हँसी लोग जाने रोई।
आंसू जल सींच सींच प्रेमबेल बोई।। मेरे०।।२।।
लोकलाज छोड दीनी क्या करेगा कोई।
दास मीरा लाल गिरिधर होनी हो सो होई।। मेरे०।।३।।

रेखता

सुन्दर अनूप जोड़ी अति मनको भावती।।
देखी मैंने आज मगमें कुंजनसे आवती।।
अंग अंग देत शोभा भूषण जड़ाऊ आली।।
नैननमें सोहे कजरा अधरनपै पान लाली।।
पग धरत हौरे हौरे गति देख हंस लाजैं।।
नूपुर परम मनोहर अति मधुर मधुर बाजैं।।
प्रीतमके कांधे कर धरे प्यारी आनंदसे।।
हँस हँसके करत बातैं सुख ललित चंदसे।।
या भाँतिसो मगन हो क्रीडा करते हैं दोऊ।।
नारायण रसिकजन विना यह रस ना जाने कोऊ।।

राग गौरी

देखो री यह मुकुटकी लटकन। देखो री यह मुकुटकी लटकन।।
रास लिये नृत्यत राधासँग, वैजंती बेसरकी अटकन।।

पीतांबर छूट जात छनै छन, नूपुर शब्द पांवनकी फटकन।।
सूरश्याम यह छबि निरखत ही, झूठा ज्ञान योगकी भटकन।।

कवित्त

माथेपै मुकुट देख चन्द्रिका चटक देख,
छबीली लटक देख रूपरस पीजिये।
लोचन विशाल देख गरे मुंजमाल देख,
अधर सु लाल देख चित्त चोप कीजिये।।
कुंडल हलन देख अलकावलिन देख,
पलक चलन देख सब रस दीजिये।
पीतांबरछोर देख मुरलीकी घोर देख,
सांवरकी ओर देख देखबो ही कीजिये।।

राग झंझोटी

चन्द्र खिलौना ले दे री मैया चन्द्र खिलौना मोहि ले दे री।।
मात यशोदा जल ले कटोरी श्यामको चन्द्र दिखावै री।।
हरि पकड़नको भुजा पसारे चन्द्र तो हाथ न आवै री।।
ना खाऊं तेरी माखन मिसरी ना तेरी धेनु चराऊं री।।
ना ओढूं तेरी काली कमरियां ना सखान सँग जाऊं री।।
जब मोरी माता मोहि बुलावै ठुमक चलत नहीं आऊं री।।
लाल कहाऊं मैं तौ नंदबाबाको तेरो सुत ना कहाऊं री।।
हिलमिल सखियां श्याम मनावैं ले टपोट हो जाऊं री।।
सूरदास प्रभु तुमरे दरशको हरिचरनों चित लाऊं री।।

राग आसावरी

तू बड़भागनि गूजरी तेरो दही श्यामने खाया।।
जाको गावैं सुर नर मुनिजन बेद अन्त नहिं पाया।।
सो वसुदेव देवकी जायो यशुमति गोद खिलाया।।
एक समय प्रहलाद उबार्‍यो नरसिंहरूप दिखाया।।
रामचन्द्र हो रावण मार्‍यो राज बिभीषण पाया।।
वामन हो राजा बलिको छलियो गजको त्रास छुड़ाया।।
सूरदास संतन हितकारी सो बालक बन आया।।

राग रामकली

मैया मैं नहीं माखन खायो री। मैया मैं नहीं माखन खायो री।।
भोर भयो गैयनके पाछे मधुबन मोहिं पठायो री।।
चार पहर बंसीबट भटको सांझ परे घर आयो री।।
मैं बालक बैयनको छोटो छीको किसबिध पायो री।।
ग्वालबाल सब वैर पड़े हैं बरवश मुख लिपटायो री।।
तू जननी मनकी अतिभोरी इनको कह्यो पतयायो री।।
तेरे जिया कुलभेद उपज्यो है जान परायो जायो री।।
यह ले अपनी लकुटकमरिया बहुत हि नाच नचायो री।।
पुलकित वदन निकल आईं दंतियां नैन नीर भरि आयो री।।
सूरदास तब हँसी यशोदा ले उर कंठ लगायो री।।

राग आसावरी

मोरमुकुट बंसीवारेने मन मेरा हर लीना।।
हूं यमुनाजल भरन जात ही आगे मिले रस भीना।।
मोहि देख मुसकात सांवरो चितवनमें कुछ कीना।।
व्याकुल भई जल भरन बिसर गयो घड़ा धरनि धर दीना।।
लोकलाज कुलकान छूट गयी तन मन अर्पण कीना।।
कृपा सखी भयी रूप दिवानी अधर सुधारस पीना।।
श्रीगोपाल धारि उर अंतर जनम सुफल करि लीना।।

भैरवी

चल रे योगी नन्दभवनमें यशुमति तोहिं बुलावै।।
लटक लटक शिवशंकर आये मनमें मोद बढ़ावै।।
नन्दभवनमें गये रे योगी राई नून कर लीनों।।
वार फेर लालके ऊपर हाथ शीशपर दीनों।।
व्यथा भई सब दूर वदनकी किलक उठे नन्दलाला।।
खुशी भई नन्दजूकी रानी दीनी मोतियनमाला।।
रहो रे योगी नन्दभवनमें व्रजमें वासो कीजे।।
जब जब मेरो लाला रोवे तब तब दर्शन दीजे।।

तुम तो योगी परम मनोहर तुमको वेद बखाने।।
बूढ़ो बाबा नाम हमारो सूरश्याम मोहिं जाने।।

राग जंगला

यशोदाने कारी अँधेरीमें जायो याते कारो रूप हरिने पायो।।
कीरति गोद गोपाल लिये मुख चूमत मोद बढ़ायो।।
रूपकी राशि मयंकमुखी मेरी राधाको रूप लजायो।।
नाम अनेक सुने घनश्यामके जबसे गोपगृह आयो।।
ना हमने वसुदेव सुने हैं वसुदेव कहांसे आयो।।
कर्मकी रेख मिटे ना सजनी वेद पुराणन गायो।।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वेद विमल यश गायो।।

भजन

यह जग है गोरखधंदा। मत बोल किसीको मंदा।।
क्यों धन जोबनमें फूले। मत कुटुंब देखकर भूले।
यहां बिछा मोहका फंदा। मत बोल किसीको मंदा।।१।।
एकै हाड़ मांस है इसमें। मल मूत्र भरे हैं जिसमें।
सब शरीर देखो गंदा। मत बोल किसीको मंदा।।२।।
मलुख रामनाम नहिं धारा। क्यों अरिका नाम बिसारा।
क्यों बना आंखका अंधा। मत बोल किसीको मंदा।।३।।
जब घड़ी कालकी आवे। नहीं बचने कोई पावे।
क्या पंडित मुनीशा बंदा। मत बोल किसीको मंदा।।४।।

राग जंगला

काहे न मंगल गावे यशोदा, काहे न मंगल गावे री।।
पूरन ब्रह्म सकल अविनाशी सो तेरे धेनु चरावे री।।
हाथ छड़ी कांधे काली कमरिया मुख धर बेनु बजावे री।।
कोटि कोटि ब्रह्मांडके करता जप तप ध्यान न आवे री।।
क्या जाने यह कौन पुण्यते यशुमति गोद खिलावे री।।
शिवसनकादिक औ ब्रह्मादिक निगम नेति यश गावे री।।
शेष सहसमुख रटत निरंतर शोभाको पार ना पावे री।।
सुन्दर वदन कमलदल लोचन गोपिनके सँग आवे री।।

मात यशोदा करत आरती देवकी मंगल गावे री।।
सूरदास तेरी अचरज लीला तेरो दर्शन पावे री।।

राग कल्याण

माई तू सुन री यशोदा, तेरो कुँवर है तारन तरन।।
हरनाकुश मारन पतित उधारन संत रहत हैं जिनके शरन।।
पहिन भूषण जब उठे मोहनजी कानन कुंडल गले माल धरन।।
सृष्टि बधावन पाप गँवावन सकल गोपियां वारैं जीवरा तन मन।।
मुरली अधर छबि बरणि न जाती भूल गयो ब्रह्मा वेद रटन।।
देवीदत्त गौरी अरु गणपति सुर नर जाको ध्यान धरन।।

भजन

देखो री यह कैसो बालक रानी यशोमति जायो है री।।
सुन्दर वदन कमललोचन देखत चन्द्र लजायो है री।।
पूरणब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नन्दघर आयो है री।।
मोरमुकुट पीताम्बर सोहै केशरतिलक लगायो है री।।
काननकुण्डल गलबिच माला कोटि भानु छबि छायो है री।।
शंख चक्र गदा पदम बिराजै चतुर्भुज रूप बनायो है री।।
परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कहालायो है री।।
मच्छ कच्छ वाराह और वामन रामरूप दरशायो है री।।
खंभफाड़ प्रगटे. नरहरिवपु जनप्रहलाद छुड़ायो है री।।
परशुराम बौद्ध कल्कि हुए भूमिको भार मिटायो है री।।
कालीमरदन कंसनिकंदन गोपीनाथ कहायो है री।।
मधुसूदन माधव मुकुंद प्रभु भक्तवत्सलपद पायो है री।।
दामोदर गिरिधर गुपाल हरि त्रिभुवनपति मन भायो है री।।
शिवसनकादिक और ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गायो है री।।
सुरनरमुनिके ध्यानन आवत अद्भुत जाकी माया है री।।
सोई परब्रह्म प्रगट हुए ब्रजमें लूटलूट दधि खायो है री।।
परमानन्द कृष्ण मनमोहन चरणकमल चित लायो है री।।

राग भैरव

मैं जोगी यश गाया रे बाबा मैं जोगी यश गाया।।
तेरे सुतके दर्शन कारण मैं काशी तज उठ धाया।।
परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जनमाया।।
अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिर आया।।
धनि तोरे भाग यशोदा रानी जिन ऐसा सुत जाया।।
गुनन बड़े छोटे मत भूलो अलखरूप धरि आया।।
जो भावै सो लीजे रावल करो आपनी दाया।।
देवो अशीश मेरे बालकको अविचल बाढ़े काया।।
ना मैं लेऊं पाट पटंबर ना मैं कंचन माया।।
मुख देखूं तेरे बालकको यह मेरे गुरूने बताया।।
कर जोड़े बिनवै नंदरानी सुन योगिनके राया।।
मुख देखन नहीं देहूं रावल बालक जात डराया।।
तीन लोकका साहिब मेरा तेरे भवन छिपाया।।
कृष्णलालको ल्याई यशोदा कर अंचर मुख छाया।।
गोद पसार चरणरज बन्दी अति आनन्द बढ़ाया।।
निरख निरख मुख पंकजलोचन नैनन नीर बहाया।।
सूरश्याम परिकरमा करके शृंगी नाद बजाया।।

भजन

श्रीकृष्ण दीनानाथजी कृपा किया करो।।
दूध दहीके कारने फिरते हो दर बदर।
कितना ही दूध चाहिये हमसे लिया करो।।
यमुनाके ओर धोरे सब ठाढ़े गोपी ग्वाल।
शिर मोर मुकुट धारे गल मोतियनकी माल।।
हिलमिलके सब गोपियां करने लगी गुफ्तगू।
या तो उसकी बंसी चुराओ या करो और जुस्तजू।।
सूरदास इस धामपर कृपा किया करो।
मैं तो तेरी शरण पड़ा आप दया किया करो।।

भजन

कुंजवन क्यों छोड़ी माधो। हमारी क्या गुना तकसीर।।
जो मैं होती जलकी मछलियां, प्रभु करे असनान,
चरण गह लेती रे ऊधो। कुंजवन क्यों छोड़ी माधो।।
जो मैं होती सीपका मोती, माला पिरोवे नंदलाल,
कंठ लग रहती रे ऊधो। कुंजवन क्यों छोड़ी माधो।।
जो मैं होती बांसकी पोरी, बंसी बजावे नंदलाल,
अधररस लेती रे ऊधो। कुंजवन क्यों छोड़ी माधो।।
जो मैं होती मोरका पंखा मुकुट चढ़ावें नंदलाल,
सीस लग रहती रे ऊधो। कुंजवन क्यों छोड़ी माधो।।

भजन

आली मोहिं लागत वृन्दावन नीको।।
घर घर तुलसी ठाकुरपूजा दर्शन गोविंदजीको।।
निर्मल नीर बहत यमुनाको भोजन दूध दहीको।।
रत्नसिंहासन आप बिराजै मुकुट धरो तुलसीको।।
कुंजन कुंजन फिरत राधिका शब्द सुनत मुरलीको।।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर भजन विना नर फीको।।

भजन

सुन ले अरज मुरारी मुनीकी। सुन ले अरज मुरारी मुनीकी।।
आज गयो हस्तिनापुर देखत द्रुपदसुता दुख भारी।।मुनीकी।।
पांचो पांडव बोल मँगाये और द्रौपदी नारी।। मुनीकी।।
दुष्ट दुशासन चीर खेंचकर लीनी लाज उतारी।। मुनीकी।।
त्राहि त्राहि कर बहुत पुकारे ले ले नाम गिरिधारी।। मुनीकी।।
कृपासिंधु तुमको सब जांचत सूर शरण बलिहारी।। मुनीकी।।

भजन

अंजनीकुमार पवनसुत योधा, मेरी अरज रामजीसे कहियो जी।।
तुम तो हो श्रीरामजीके पायक, वाहूसे आन मिलायो जी।
बहा जात हूं भवसागरमें, बहियां पकड़ मेरी लियो जी।।

सिया राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, वाहूसे लाल सुनायो जी।
तुलसीदास हनुमान भरोसे चरणकमल चित लायो जी।।

भजन

देखो हरिछवि नैनन भरभर चढ़त बरात सिया रघुवरकी ।।
न्हाय धोय चौकीपर बैठे पहन लिये तनके कपड़े रे ।।
मात कौशल्या करत आरती सखियां मंगल गाय रहीं रे ।।
मूंगा मोती रत्नजड़ित है शिरपर मुकुट विराज रहो रे ।।
चढ़ बैठे गजहस्तीके ऊपर पुष्पोंकी वर्षा लाग रही रे ।।
अयोध्यापुरी से निकस पड़े हैं जनकपुरीकी राह लियो रे ।।
जनकराज घर नौबत बाजे जनकपुरी एक जोत चढ़ी रे ।।
ब्रह्मा विष्णु वेद पढ़त हैं नारद बीन बजाय रहो रे।।
इंद्रराजके घुरे रे नगारे इसविधि फेरे होय रहे रे।।

भजन

चलो री सखी दर्शन करलो, रथमें रघुनन्दन आवत हैं।।
रावण आदि महाभट मारे, पृथ्वीभार उतारत हैं।
सुग्रीव बिभीषण तिलक कियो है, देव सकल गुण गावत हैं ।।
राम लक्ष्मण मात जानकी, हनुमत चमर ढुलावत हैं।
तुलसीदास भजो भगवानै. देव सुमन झड़ि लावत हैं ।।

भजन

राम सुमर ले सुमरन कर ले को जाने कलकी।।
सबर ना या जगमें पलकी ।।टेक।।
रैन अंधेरी निरमल चंदा ज्योति जगै झलकी।
धीरे धीरे पाप कटत है होत मुक्ति तनकी।।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी कर बातें छलकी।
शिरपर गठड़ी धरी पापकी कब होगी हलकी।।
भवसागरको त्रास कठिन है थाह नहीं जलकी।
धर्मी धर्मी पार उतर गये डूबे अधम जनकी।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो काया मंडलकी।
भज भगवान और नहिं कोई आशा रघुवरकी।।

राग भैरवी

तेरी शरण मैं आई मोहे राखो कन्हाई॥
मोको और शरण नहिं सूझे मैं शरणागत आई॥
जो जो शरण तिहारी आयो सबको पार लगाई॥
सेनी भगत त्रिलोचन तारो तारी मीरांबाई॥
जिन जिन ध्यायो तिन तिन पायो कहांतक करूं बड़ाई॥
चरणकमलकी आस तिहारी ज्ञान भक्त बलि जाई॥

राग भैरवी

सांवरा मेरा दिलदास सानू प्यारा जो लगदा॥
सोहणी सूरत बड़ी बड़ी अँखियाँ गल मोतियनका हारा॥
एक नजर तुसी हँसकर देखो वारूं मैं जीवरा हजारा॥
नारायण असी रूप दिवानी आय पड़ी तेरे द्वारा॥

राग भैरवी

श्यामसुंदर व्रजवासी तेरे चरणोंकी दासी॥
दासीजान मोहिं आप अपनाओ मैं दर्शनकी प्यासी॥१॥
चरणकमलकी आस तिहारी तुम्हें छोड़ कहां जासी॥२॥
भक्त जान मोहे कर लो अपनी लोग करेंगे मेरी हाँसी॥३॥
ज्ञानभक्त मोहे बेग उबारो मैं दर्शन की प्यासी॥४॥

राग भैरवी

तेरी सूरत सानू प्यारी आशा लागी तिहारी॥
तेरे दर्शनमें भई बावरी दे दर्शन गिरिधारी॥
टेर सुनी प्रह्लाद भगतकी प्रगटे खम्भमें जारी॥
द्रुपदसुताकी तैं पति राखी गजकी बात सँवारी॥
संतन कारण दुःख निवारण नारायण बहिहारी॥

भजन

केड़े वन रामने लिया बनवासा॥ टेक॥
पूँछे भरतजी मात कौशल्या मैया दशरथ बरकी बाता॥१॥
सिंह और व्याघ्र वाकी शरणमें आ गये माता मोरा पंख झुलासा॥२॥
सूखे तालतैं तरावन लागे हंसा करने निवासा॥३॥

सूखे वन हरयावल हो गये माता फूटने लगियां शाखा ।।४।।
तुलसीदास ऐसे कहत भरत मैया पंचवटी है निवासा ।।५।।

राग भैरवी

दे दरर्शन मेरे प्यारे मेरे नैनोंके तारे।।
दे दर्शन कित गयो सांवरो तरसत नैन हमारे ।।
वा शोभाको तरसत हूं मैं मोर मुकुट शिर धारे ।।
वनवन व्याकुल फिरत अकेली श्यामही श्याम पुकारे ।।
ज्ञान भगत मोहे बेग मिलो अब तजूं प्राण तेरे द्वारे ।।

राग बिलावल

आज इन दोउ वन पर बलि जैये।।
रोम रोमसों छबि बरसत है निरखत नयन सिरैये ।।
रूपरास मृदुहास ललित मुख उपमा देत लजैये ।।
नारायण या गौर श्यामको हिये निकुंज बसैये ।।

राग कान्हरा

आज रचो रसरास विहारी।।
जैसोई वृंदा विपिन सुहावन तैसेही शरद रैन उजियारी ।।
यमुनातीर फूलनकी शोभा फूल रही चहुं दिशि फुलवारी ।।
चलत पवन मनमोद बढ़ावन शीतल मंद सुगंधित प्यारी ।।
निरतत लालसहित ब्रजबाला चपल चतुरगति लै लै न्यारी ।।
बजत अनेक भांति मृदुबाजे परम प्रवीन बजावन वारी ।।
कोउ सखी स्वर दुगुन अलापत करत बड़ाई लाला गिरिधारी ।।
नाचत सुमन झरत हैं शीसतें मुखश्रम बिंदु देत छबि न्यारी ।।
कबहूँ श्याम बिलग ह्वै नाचत ताल देत मिल गोपकुमारी ।।
नारायण नभतैं सुर निरखत बरखत फूल सहित निजनारी ।।

भजन

ऊधो करमनकी गति न्यारी।।
सब नदियां जल भरभर रहियां सागर किसबिधखारी।।
उज्ज्वल पंख दिये बगलाको कोयल किसगुण कारी।।
सुंदर नयन मृगीको दीने वन वन फिरत उजारी।।

मूरख मूरख राजे कीने पंडित फिरत भिखारी॥
सूरश्याम मिलनेकी आशा छिनछिन बीतत भारी॥

राग खेमटा

देखी कहूं ग्वालिन मैं मेरी प्राणजिवानी॥
ए हो सुजान प्यारी मम चूक क्या बिचारी॥
क्यों दूर गई लतानमें दे दर्श आनंदिनी॥
जब चलति चाल छबिसों तब हलत हार उरसों॥
ठुम ठुम चरण धरनपै तू है गति गयंदिनी॥
तेरी छटा चरणकी निंदत रवि किरनकी॥
हाहा कुँवरि किशोरी तू है सुखसमूहनी॥
यह सुनत वचन मेरो पाषाण द्रवत हेरो॥
हितरूप लालचेरो हो दुख निकंदिनी॥

भजन

तुम हो प्रभु चांद मैं हूं चकोरा, तुम हो कमलफूल मैं रसकी भौंरा॥
ज्योति तुम्हारीका मैं हूं पतंगा, आनंदघन श्याम मैं बनका मोरा॥
जैसे है चुम्बककी लोहेसे प्रीति, आकर्षण कर मोहि लगे तार तोरा॥
पानी विना जैसे हो मीन व्याकुल, ऐसे ही तड़पाये तुमरा बिछोरा॥
एक बूंद जल प्यासा हूं चातक, अमरतकी वर्षा कर हरो ताप मोरा॥

लावणी

सांवरे शरणागत तेरी। सभाबिच दुर्योधन घेरी॥
कि अरजुन भीम बलकारी। उन्होंसे मैं हो गई न्यारी।
दु:शासन चीर खैचने आया। मनमें शोक नहीं लाया।
दोहा- भरी सभाके बीचमें, लई दुष्टने घेर।
अरज करत है द्रौपदी, तुम सुनो कृष्ण मेरी टेर॥
आज मैं पड़ी शरण तेरी॥ सांवरे शरणागत तेरी॥१॥
नाथ तैं जरासिन्ध मारो। कि छिनमें उसे चीर डारो।
पकड़के कंस मार दीनो। नाथ भक्तोंको सुख दीनो।
दोहा- रुदन करत है द्रौपदी, ले ले ऊंचे श्वास।
पांचों पति मुख मोड़ गये हैं, मुझे तिहारी आस॥

आज मैं आई शरण तेरी।। सांवरे शरणागत तेरी ।।२।।
नाथ तैं सजन पतित तारो। उसीको तैं वैकुंठ धारो।
जातकी भिलनी नहिं जानी। प्रेमवश होके फलखानी।
दोहा- अयरापति फंद काटियो, चरा न लाई बार।
सुदामा भगतकी विपदा काटी, दुष्ट दैत्य दियो मार।।
नाथ आज प्रगटी कल तेरी।। सांवरे शरणागत तेरी ।।३।।
रुदन जब कृष्णने सुन लीनो। कि छिनमें संकट काट दीनो।
दुःशासन मन अपने हारा। न जावै चीर उससे उतारा।
दोहा- ठंढीराम सभा दुष्टनकी, देख गई मुरझाय।
मन अपनेमें द्रौपदी, कृष्ण कृष्ण गुण गाय।।
नाथ तैं काटी फंद मेरी।। सांवरे शरणागत तेरी ।।४।।

लावणी

सुनो फरियाद कृष्ण मेरी।
मोपै पड़गई विपति कुमार, आज तुम कीजो आन फेरी।।
मोड़ गये मुख पांचों भर्ता।वचन कोई सन्मुख नहीं कर्ता।
दुष्टकी सभा जोर कीना। पांचोंसे हमको जीत लीना।
दोहा-करुणानिधि तुम्हरे विना, कौन सुने मेरी टेर।
गऊ बीच मझधारके, लई सिंहने घेर।।
बेग लीजिये खबर मेरी।। सुनो फरियाद कृष्ण मेरी।।१।।
हुई बेलाज सभा सारी, चाहत है नग्न करी नारी।
द्रौपदी रुदन करत ठाढ़ी, कि मुसकिल बनी आन गाढ़ी।
दोहा-खड़ा दुशासन आनके, करके भुजा का जोर।
दुर्योधनके बचनसो, पलट नायका तौर।।
सभामें लेता पत मेरी।। सुनो फरियाद कृष्ण मेरी।।२।।
नाथ करी जनकी प्रतिपाला। काट दियो संकट ततकाला।
नाम प्रहलाद तेरो लीनो। रूप नरसिंह तैं ही कीनो।
दोहा-खंभफाड़ हिरनाकुश मारो, किये भक्तनके काज।
अंत समय प्रहलादकी, लई राखि तैं लाज।।
करी क्यों मेरी बेर देरी।। सुनो फरियाद कृष्ण मेरी।।३।।
ग्राहने गजको आन घेरा। विपतमें लीना नाम तेरा।

तभी उठ नग्न चरण धाये। वाहनकी सुध न कहीं पाये।
दोहा-काटि तार तैं दवकी छिनमें, गजको लियो छुड़ाय।
ठंढीराम मेरी बार नाथ तैं, सुरत कहां लई लाय॥
खड़ा यह दुष्ट मोहि घेरी॥ सुनो फरियाद कृष्ण मेरी॥४॥

भजन लावणी

लाज कानको छोड़ चीर सब अपने अपने ले जाओ।
बोलैं कृष्ण कदम चढ़ बैठे सब ग्वालिनको यहां लाओ॥
जलमें तुमको नहीं मिलेंगे निकलके बाहर यहां आवो॥
किया पाप तैं बड़ा ग्वालिनी नग्न हुई जलबीच बड़ी।
पुरुषसंज्ञा जलकी ग्वालिन अब कैसे लज्जा पावो॥१॥
तुमने हमको चोर बनाया हम नहीं चोर मेरी ग्वालन।
चीर उठाके करी नसीहत तुमको यह अति भारी।
नग्न ना बड़ियो जलमें मन अपने निश्चय पाओ॥२॥
जो डर दियो कंसराजका तभी चीर मैं ना दूंगा।
सुने कंस तेरे माई बापका देख जोर मैं अब लूंगा।
जलसे बाहर होकर प्यारी वस्त्र आपने यहां पाओ॥३॥
किसको शंका करी ग्वालिन मैं बालक कुछ ना जाना।
जलका परदा दूर करो कोई नहीं देखता है स्याना।
रामदत्तजी कहै कृष्णको जल्दी वदन अपना दिखलाओ॥४॥

भजन

जानकीनाथ सहाय करे जब, कौन बिगाड़ करै नर तेरो॥
सूरज मंगल सोम भृगुसुत, बुध अरु गुरु वरदायक तेरो॥
राहु केतुकी नहि गम्यता, संग शनीचर होत उचेरो॥
दुष्ट दुशासन विमल द्रौपदी चीर उतार कुमंतर प्रेरो॥
जाकी सहाय करी करुणानिधि बढ़ गये चीरके भार घनेरो॥
गर्भकाल परीक्षित राखो, अश्वत्थामा जब अस्त्र प्रेरो॥
भारतमें मरुहीके अंडा तापर गजका घंटा गेरो॥
जाकी सहाय करें करुणानिधि वाको जगमें भाग घनेरो॥
रघुवंशी संतन सुखदायक तुलसीदास चरणको चेरो॥

भजन

सखी तोहि ढूंढ़त हैं नंदलाल कहीं मत जावे री ।।
तेरीसों अब हीं आयो वह घनी देर मोसे बतलायो ।
तोहि देखन कारन फिर फिर आवे री ।। सखी तोहि० ।।
आजकाल सगरे व्रजमाहीं रूपवान तेरे सम नाहीं ।
तेरे वदनके आगे चंदा लजावे री ।। सखी तोहि० ।।
नारायण मोहे यह डर भारी जो वासे भई भेट तुम्हारी ।
फिर जाने वह कहा कलंक लगावे री ।। सखी तोहि० ।।

भजन

हरि ना भजा तिनके मुख कारे। हरि ना भजा तिनके ० ।।
अमृत छोड़ विषयरस पीवत, रामनाम क्यों लागत खारे ।।
साधुसंगति मन नहीं भावे, खल नीच संग करत प्यारे ।।
भगवतगीता सुनी नहिं श्रवण, सो नर घोर नरकमें जा रे ।।
तुलसीदास ऐसे पतितनके यमके दूत रहत रखवारे ।।
हरि ना भजा तिनके मुख कारे। हरिना भजा तिनके ० ।।

भजन

मन मोह लिया श्यामने बंसीको बजाके ।।
बेसुध किया दिलदारने जुलफोंको दिखाके ।।
पट पीत मुकुट मोरका है लटपटी पगिया ।।
चलते हैं लटक चालसे भृकुटीको नचाके ।।
अलमस्त किया दममें ब्रजनारिको मोहन ।।
मुरलीके साथ किंकिणी नूपुरको बजाके ।।
कुरबान सनम तुझपै दिलो दीन हमारा ।।
राखो ललित किशोरी गलेसे लगाके ।।

राग खमाच

कैसी बँसिया बजाय जादू डारा रे
श्रवण सुनत नहिं परत चैन, तन मन धन तुमपै वारा रे ।।
बांकी छबि दिखलाई चित चपल चलाई,
ऐसी बातैं बतलाई मेरा जिया ललचाई। कर तिरछी नजर भर मारारे ।।

जाकी मधुरी हँसन मुसकन तकन,
झमकन झमकन कर मुरली लसन। धरि ध्यान दुलारे मन थोरा रे ॥

सोरठा

छांड़ो लँगर मोरी बैयां गहो ना॥
मैं तो हूँ नारि पराये घरकी, मेरे भरोसे गोपाल रहो ना ॥
जो तुम मेरी बैयां गहत हो, नयन मिलाय मेरे प्राण हरो ना ॥
वृंदावनकी कुंजगलीमें, रीतको छोड़ अनरीत करो ना ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, चरणकमल चित टारे टरो ना ॥

गजल

जहां ब्रजराज कल पाये चलो सखी आज वा वनमें ॥
बिना वा रूपके देखे विरहकी दौं लगी तनमें ॥
न कल पड़ती है बेकलको न जी लगता है बिन जानी ॥
भई फिरती हूं जोगिनसी सरे बाजार गलियनमें ॥
करूं कुर्बान जी उसपर जनमभर गुण न भूलूंगी ॥
मेरा महबूब जो लाकर बिठा दे मेरे आंगनमें ॥
नहीं कुछ गर्ज दुनियांसे न मतलब लाजसे मेरा ॥
जो चाहो सो कहो कोई बसा अब तो वह मनमें ॥
तेरी यह बात सांची है नहीं शक इसमें नारायण ॥
जो सूरतका है मस्ताना वह परचे कैसे बातनमें ॥

राग रेखता

टुक बंगलामें बैठो बामकी बहार है॥
घरको न जाओ प्यारियां भई अबार है॥
जाही जुही चमेली क्या मालती सुहाई॥
क्या सर्व सुहागन सेवती क्या गुल डोटी लगाई॥
चारों तरफ सरफसे क्या गुलाबस न्यारी॥
क्या सर्व सफेद कनेर क्या गुलाबास न्यारी॥
हँसके ललित किशोरी उर कंठसो लगाई॥
गुलशन सिधारो प्यारी क्या भई चमन सवाई॥

राग दादरा

प्यारी तेरे अंगनमें फूलनकी बहार।।
फूलनके बाजूबंद फूलनके गजरे फूलनके सोहैं गलहार।।
चंपा मरुवा राय चमेली सब फूलनमें बहार।।
चंद्रसखी भज बालकृष्णछबि सब गोपियनमें गुपाल।।

राग बरवा

तुम जाओ जी जाओ जाके रहे हो रात।।
म्हारे काहेको आये जब भयो प्रभात।।
लटपट पेंच उनींदेसे नयना डगमग डगमग डगमगात।।
कपटी कुटिल मैं तोहिंते कहत हो मैं ना मानूंगी तोरी एक बात।।
हा हा करत हूं पैया परत हूं अबकी चूक मेरी करो जी माफ।।
जुगरामदास पिया मैं ना मानूंगी तुम वाहीके जावो जाके लगे हो गात।।

राग परज

तुम टेढ़े म्हारी टेढ़ी गगरिया ।।
टेढ़ी टेढ़ी चाल चलो त्रिभंगी काहेको दिखावे लाला टेढ़ी पगरिया।।
टेढ़ी अलक मैं क्या बांधूंगी कछु न सुहावे मोहे थारी सँगरिया।।
टेढ़ो श्रीवृंदावन गोकुल टेढ़ो वाहूसे टेढ़ी वृषभानु नगरिया।।
टेढ़ो श्रीनंदबाबा मात यशोदा और टेढ़ी वृषभानु दुलरिया।।
सूरदास टेढ़ेकी संगत टेढ़े होकर पार उतरिया।।

राग परज

नाथ अनाथकी सुध लीजे ।।
तुम विन दीन दुखित हैं गोपी बेगहि दर्शन दीजे।।
नयनन जल भर आये हरि विन ऊधोको पतिया लिख दीजे।।
सूरदास प्रभु आश मिलनकी अबकी बेर हरि आवन कीजै।।

ठुमरी

माथेपै मुकुट श्रुति कुंडल विशाल लाल।।
अलक कुटिल सो अलिनमद गंजनी।।
काछनी कलित कटि किंकिणी विचित्र चित्र।।
पीत पट अंग सो विराजै द्युति बैंजनी।।

दिये गलबाहीं प्रिया प्रीतम बिहार करैं ।।
अति अनुराग भरि आईं नई द्वै जनी ।।
कहै जै दयाल प्रभू मेरो मन मोहि लियो ।।
मंद मंद बाजत गोविंद पांय पैंजनी ।।

भजन

मेरी सुध लीजो श्रीव्रजराज ।।
और नहीं जगमें कोउ मेरो तुम ही सुधारन काज ।।
गणिका गीध अजामिल तारे और शबरी गजराज ।।
सूर पतित तुम पतित उद्धारन बाँह गहेकी लाज ।।

राग कल्याण

श्यामकी बंसी वन पाई ।।
उठो यशोदा मैया खोलो किंवरिया, मैं बंसी गृह देनेको आई ।।
बहुत दिननके उनींदे मोहन, सोने दे वृषभानुकी जाई ।।
इतनी सुनत निकस आये मोहन, अंतरयामी प्रभु कुँवर कन्हाई ।।
मुरलीके संग पहुँची हमारी, दे राधे वृषभानुकी जाई ।।
हम जानी कछु मान बढ़ेगो, तुम हरि हमको चोरी लगाई ।।
श्रवण न सुनी नयन नहिं देखी, चलो ठौर हम देहिं बताई ।।
सूरदास गुण कहँ लग बरणै, दोनोंमें एकसी चतुराई ।।

भजन

मेरे माधो मैं तेरी गति ना जानी ।।
सहस्र गऊ नित पुण्य करत है सो राजा बड़ दानी ।।
मरती बेर कूपका किरला धीरज किसविध ठानी ।।
मारन कारन आई पूतना कुचपर विष लिपटानी ।।
उसकी गति मति लखी श्यामने, तुरत वैकुंठ पहुँचानी ।।
बड़े बड़े भूप राजाकी कन्या उनपर योग दुरानी ।।
एक चेरी दूजे कंसकी मालन सो कीनी पटरानी ।।
मोरमुकुट माथे तिलक बिराजे कुंडलकी छबि लानी ।।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि चरनोंमें बलि जानी ।।

राग जंगला

कौन सुने प्रभु बात हमारी ।।

समरथ तुम बिन देखूं ना कोई, केहिसे कहूं यह व्यथा बनवारी ।।१।।
तुम अगति अनाथके स्वामी, दीनदयालु कुंजविहारी ।।२।।
सदा सहाय करो दासनपर, जिन उर धरी सोई प्रतिपारी ।।३।।
अबहूं शरण मैं आयो यदुपति, राख लियो भवत्रास निवारी ।।४।।
चरननपर बलि बलि, कौन गुसेतैं कृपा बिसारी ।।५।।

राग सिंध

सभी मिल राम भजो नर नारी ।।

हरिके भजन बिन कैसे तरोगे, चौरासी लख बारी ।।
ध्रुव प्रह्लाद पिता तज दीना, भरत तजी महतारी ।।
हरिके भजनसे पतित तर गये, गनिका जैसी नारी ।।
हरिके प्रभु गिरिधर नागर, चरनोंपर बलिहारी ।।

भजन

साधो कलियुगकी गति आई ।।

अपने दोष न देखे कोई निन्दा करे पराई ।।
मातपितासे वैर करत हैं नारीसे प्रीति लगाई ।।
गंगाजलको हाथ पकड़के झूठी देयँ गवाई ।।
जिस नारीसे संग करते तिसको कहते माई ।।
जो नर झूंठी बात करत है तिनको कहत कदाई ।।
जो नर पापी कपटी छलियां तिनकी होत बड़ाई ।।
गौवनका अब बुरा होत है संतनकी छोटाई ।।
पुत्री बेंच पिता धन खावें घर घर होत लड़ाई ।।
शूद्र वेद पढ़ें कलियुगमें ब्राह्मण छुट्टी पाई ।।
पामर राज करें कलियुगमें उत्तम सेवा उठाई ।।
सबकी बुद्धि हरी कलियुगमें क्या राजा क्या राई ।।
अपना अपना धर्म छोड़के धनकी करें कमाई ।।
रामनामका सुमिरन छोड़ा हरकी कहन भुलाई ।।
खेमराज तव धर्म रहेगा हरि होवैंगे सहाई ।।

भजन

बँसीवाले बेग खबर लीजो मोरी।।

अर्जुनके रथ बाहे साँवरा बेग खबर लीजो मोरी।।
माई कहे धिया द्वारका ब्याहिये वीर कहे री चंदेरी।।
राजा शिशुपाल महाबल जोधा करता जोरा जोरी।।
कंगना बांध वही आन बैठो है छाती जले है मेरी।।
लिखलिख पतियां रानी रुकमनि भेजै दीनदयालके नेरी।।
इतनी अरज मेरी कहिये श्यामसों गाय सिंहने घेरी।।
अंबिकापूजन रानी रुकमनी निकसी आगे श्यामने घेरी।।
दास बिहारीकी यही है बिनती रुकमनी होगई तेरी।।

राग दादरा

मैं हो रहियां आधीन री आज श्याम हू नहिं आये।।
सुनते ही टेर धाये गज ग्राहते आ छुड़ाये।
अब मेरी बेर स्वामी किस काजमें भुलाये।।
प्रह्लादको उबारो नरसिंहरूप धारो।
शत्रुको मार दलमें भक्तनके काज सँवारो।।
पूंछे अनेक पंडित नहीं आये नन्दके नंदन।
नन्दजूके बहुत प्यारे शिर मोरमुकुट धारे।।
नारायण वाकी बातें काहू न पार पायो।
सखी प्रीति लगाके वासों मैं आज फल पायो।।
मैं हो रहियां आधीन री आज श्याम हू नहिं आये।।

भजन

श्रीराम राम कहनेकी मुझे बान पड़ गयी।।टेक।।
जानूं नहीं कुछ और इस नामके सिवाय।
प्रेमी प्यारे भक्तकी धुनि कान पड़ गयी।।१।।
मीठा लगै है नीक अधिक प्रेम रसभरा।
करपान ज्ञान जान मैं आ जान पड़ गयी।।२।।
जपता रहूं मैं हर घड़ी भूलूं नहीं कभी।
बांके बिहारी लालकी पहँचान पड़ गयी।।३।।

छाई है रोम रोम मैं बदरी सी यह सिया।
इस नामसे मुशकिल मुझे आसान पड़ गयी ।।४।।

भजन

भक्तोंके काज सिध करे लोग तुझे कहैं बंसीवारा ।।
पाव पदम और मुकुट शीसपर रहता मतवारा ।।१ ।।
गौवोंके डोले साथ ओढ़े कम्बल कारा ।।२ ।।
कच्छरूप लियो धार जभी मधुकैटभको मारा ।।३ ।।
मत्स्यरूप लियो धार असुर शंखासुरको मारा ।।४।।
रामचन्द्र अवतार जिन्होंने रावणको मारा ।।५।।
वराहरूप लियो धार जभी हिरण्याक्षको मारा ।।६।।
प्रह्लाद काज करने आप बन नरसिंह ललकारा ।।७।।
परशुराम जब भये क्षत्रीकुल जीत लिया सारा ।।८।।
भक्तोंके काज सिध करे लोग तुझे कहें मुरलीवारा ।।९।।

भजन

जै जै जै जै जै जगजननी। शरण तुम्हारी आयो है ।।
बैल सिंहासन बैठी है मैया। शंभूरूप धरायो है ।।
जटाजूट शिर गंग विराजै। शेषनाग लपटायो है ।।
गरुड़ सिंहासन बैठी है मैया। विष्णुरूप धरायो है ।।
मोरमुकुट पीतांबर सोहै। मुख धर बेन बजायो है ।।
हंस सिंहासन बैठी है मैया। ब्रह्मरूप धरायो है ।।
चार वेद मुख चार बिराजैं। चार वेद जस गायो है ।।
सिंह सिंहासन बैठी हे मैया। शक्तिरूप धरायो है ।।
रामदिता तेरी अस्तुति करके। चरनकमल चितलायो है ।।

भजन

मिलने सुदामा आये श्रीकृष्णजीसों आज ।।
एक तो फटे तन कपड़े दूजे वदन मलीन ।।१।।
मुट्ठी एक तांदुल लाये सो भी लिये हैं छिपाय ।।२।।
हँस हँस के पूँछे रुकमनी यह क्या तुम्हरे लगें साख ।।३।।
बालकपनके मित्र हमारे पढ़े एकी चटसाल ।।४।।
सूरदास कहते कर जोड़े हरिचरणों चित लाय ।।५।।

भजन

राम राम राम जीह जौलौं तू न जपि है।।
तौलौं तू कहूं जाय तिहूं ताप तपि है।।१।।
सुरसरि तीर बिनु नीर दुख पाइ हैं।
सुरतरु तर तोहिं दारिद सताइ है।।२।।
जागत बागत सुख सपने न सोइ है।
जनमि जनमि युग युग जग रोइ है।।३।।
छूटिबेकी जतन बिशेषि बांध्यो जाइगो।
ह्वै है विष भोजन जो सुधासानि खाइगो।।४।।
तुलसी बिलोकि तिहूं काल तोसे दीनको।
रामनामहीकी गति जैसे जल मीनको।।५।।

भजन

खबर ना है जगमें पलकी।
राम सुमर ले सुकृत कर ले को जाने कलकी।।टेक।।
तारामंडल रवि चंद्रमा जोत झलाझलकी।
दिना चारकी चटकचांदनी ज्यों बिजली झमकी।।१।।
यह संसार सुपनकी माया ओस बूंद जलकी।
ढलक जाय कुछ बार न लागे यह दुनियां छलकी।।२।।
जब हंसा देहीके भीतर कर खुशिया दिलकी।
जब यह हंसा निकल जाय तब माटी जंगलकी।।३।।
काम क्रोध मद लोभ निवारो आस तजो फलकी।
शील संतोष दया उर राखो कहैं कबीर दिलकी।।४।।

भजन

श्रीराधे प्यारी दे डारो बाँसुरी मोरी।।
जिस बंसीसें मोरा प्राण बसत है, सो बंसी गयी चोरी।।१।।
सोनेकी नाहीं कान्हा रूपेकी नाहीं, हरे हरे बांसकी पोरी।।२।।
काहेसे गाऊं राधे काहेसे बजाऊं, काहेसे लाऊं गैया घेरी।।३।।
मुखसे गावो प्यारे तालसे बजावो, लकुटीसे लाओ गैयां घेरी।।४।।
चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि, हरिचरणनकी चेरी।।५।।

भजन

नमो नमः तुलसी महारानी।।

कौन तपस्या कीनी महारानी शालिग्राम महापटरानी।।
छप्पन भोग छतीसों ब्यंजन बिन तुलसी हरि एक न मानी।।
निर्मलपत्र मंजरी कोमल शालिग्रामके शीस चढ़ानी।।
श्यामसखी माई तेरो जस गावै भक्तिदान दीजो महारानी।।

भजन

व्रजकी लता लगे प्यारी जहां बोले पंछी मोर।
एक तो कदंबकी छैयां दूजे शीतल वायु बहाय।।
एक तो कुंज बड़ी भारी दूजे दर्शन श्याम पाय।
एक तो यमुनाजीकी न्हायबो दूजे पाप कट जाय।।
बँसीकी धुन सुन मैं चली जहां ठाड़े नन्दलाल।
सूरदास कहते कर जोड़े प्रभुचरणों चित लाय।।

राग कल्याण

श्याम तेरी बँसरी नेक बजाऊं।।

जो तुम तान कहो मुरलीमें, सोइ सोइ गाय सुनाऊं।।
हमरे भूषण तुम सब पहरो, हौं तुमरे सब पाऊं।
हमरी बिंदी तुम ही लगाओ, हौं शिर मुकुट धराऊं।।
तुम दधि बेचन जाहु वृंदावन, हौं मग रोकन जाऊं।
तुमरे माखनकी मटकिया, हौं मिलि न्याल लुटाऊं।।
मानिनी होकर मान करो तुम, हौं गहि चरण मनाऊं।
सूरश्याम प्रभु तुम जो राधिका, हौं नँदलाल कहाऊं।।

भजन

सुनो नन्दके लला (जी) तेरे नयनोंने छला।।
तेरी सांवरी पेशानी मेरे मनको खूब भानी।
घर आवो क्यों ना जानी तकसीर क्या भला।।१।।
ज्यों ज्यों तू देर लावे, मेरी जान चली जावे।
तोहे मेहर भी ना आवै, जलतीको ना जला।।२।।
धनीराम पै कृपा कीजिये, इतना सवाब लीजिये।
मिलना जरूर कीजिये, अब नेक यह सला।।३।।

दोहा

बार बार बर मांगहूँ, हरषि देहु श्रीरंग।
पदसरोज अनपायनी, भक्ति सदा सत्संग ।।१।।
अर्थ न धर्म न काम रुचि, पद न चहूं निरबान।
जन्म जन्म रति रामपद, यह बरदान न आन ।।२।।
एक घड़ी आधी घड़ी, आधीमें पुनि आध।
तुलसी संगति साधुकी, कटैं कोटि अपराध ।।३।।
जय जय सीतारामकी, जय लक्ष्मण बलवंत ।
जय कपीश सुग्रीवको, कहत चले हनुमंत ।।४।।
कहेउ दंडवत प्रभूसन, तुम्हें कहूं कर जोरि।
बार बार रघुनायकहि, सुरति करायहु मोरि ।।५।।
कथा-विसर्जन होत है, सुनो वीर हनुमान।
राम लक्ष्मण जानकी, सदा करें कल्याण ।।६।।

भजन

लगे हैं दो नयना रामसों लगे।।टेक।।

मात कौशल्या रुदन करत है, रामलक्ष्मण सिया वनको चले ।।१।।
रथ गयो दूर वदन भयो व्याकुल, दशरथ प्राण तजे ।।२।।
वनमें जाके कुटिया बनाई, बूटी बिरवा खूब लगे ।।३।।
सुवरण मिरग बने मारीचा, बूटी बिरवा खूब चरे ।।४।।
योगीका रूप धरो रावणने, अलख जगाय सियाको हरे ।।५।।
तुलसीदास आश रघुवरकी, हरिके चरणमें ध्यान लगे ।।६।।

भजन

भजो रघुवर श्याम युगलचरना।।

इतमें अयोध्या निर्मल सरजू, उत मथुरा शीतल यमुना।।
इत दशरथजूके कुँवर कहाये, उतमें कहाये नन्दजूके ललना।।
इतमें कौशल्या मैया गोद खिलावै, उतमें यशोदा झुलावै पलना।।
इतमें धनुष बाण तरकस सोहै, उत मुरली मुखपर धरना।।
गौतमनारि अहल्या तारी, उत कुब्जासंग कियो रमना।।
इतमें जानकी बाये विराजैं, उत राधेसँग कियो रमना।।

रावणके दश मस्तक छेदे, कंसको मार बहायो यमुना।।
इतमें बिभीषण राज बिराजे, उग्रसेनको कियो अपना।।
तुलसीदास आश रघुवरकी, युगल चरणपर चित धरना।।

कव्वाली

सखी तुमने सुना होगा कहां घनश्याम रहते हैं।।
सलोने श्याम गिरिधारी कहांपर श्याम रहते हैं।।
मैं सुनके टेर बंसीकी निकलके घरसे जब आई।।
पता उनका नहीं पाया बता किस धाम रहते हैं।।
किया क्या जादूसा मोपै बजा मुरली-मनोहरने।।
न देखी छबि अनोखेकी कहां घनश्याम रहते हैं।।
दया कर नन्दके लाला दरश एकबार दिखला दो।।
तुम्हारे दर्श बिना बेचैन दौलतराम रहते हैं।।

भजन

ध्यान ईश्वरकी तरफ लगाना, भजो आदि अनादि गोपाल नन्दलाला।।
पीत पीतांबर शिरपर साजै रंग काला, ढंग आला,
मती बंदे एलपी नादाना।। ध्यान ईश्वरकी तरफ लगाना।।

थेटर

करी निंदरा जो प्यारी।। आयु खोय दीनी सारी।।
तैंने कुछ ना बिचारी।। निपट नादान।।
कुछ सोचो तो भाई।। क्यों कर होगी रिहाई।।
पड़े आवागवनमें फिर होता हैरान।।
गाओ गाओ गुण ईश्वरके धन्यवाद।।
करता जो लाखों पदारथ है दान।।
करो हरगिज न पाप।। जपो ईश्वरके जाप।।
होवै दूर संताप।। सब दुख मिट जा सुख हो सदान।।
वाह वा वा वाह वा वा न करी निंदरा जो प्यारी०।।

भजन

श्याम मेरा माखन क्यों खाया।
सूने घरमें चोरी करना किसने सिखलाया।।टेक।।

गोरस बिखरा देखके मैं सोचूं थी दिनरात।
थी मैं तेरी ताकमें तू नहीं लगता था हाथ।
आज मैंने तुझको है पाया, श्याम मेरा माखन० ॥१॥
मा-बापोंका लाडिला तू, बड़ेघरोंका पूत।
दही चुरावत पकड़ लिया, तेरी देख लई करतूत।
जरा नहीं मनमें शरमाया॥ श्याम मेरा माखन० ॥२॥
बोल नहीं निकसे तेरा, तैं मुखमें भर लई छाछ।
पकड़ चलूं ले कंसपै, मैं कहती सांची-साच।
फिरे तू किसका बहकाया॥ श्याम मेरा माखन० ॥३॥
इतनी सुनके श्यामने वाके, मुखपर कुरली कीन।
गोपीकी आंखें मिचीं, आंख मिचाई दीन।
दौड़ बदरीसो घर आया॥ श्याम मेरा माखन० ॥४॥

दोहा

गरब करेसे जात घट, सकल बड़ाई मान।
गरब किया रावण गया, नहिं रहा पता निशान॥१॥
करो कष्ट कुछ काम लो, पुरषारथके हेत।
बदरी बरसे फेर क्या, सूख जाय जब खेत॥२॥

राग रामकली

हम ना किसीके कोई ना हमारा। झूंठा है सब जग व्यवहारा॥
तनु संबंध सकल परिवारा। सो तनु हमने जाना न्यारा॥१॥
पुण्य उदय सुखका बढ़वारा। पाप उदय दुख होत अपारा॥
पाप पुण्य दोऊ संसारा। मैं सब देखन जाननहारा॥२॥
मैं तिहुँ जग तिहुँ काल अकेला। परसंयोग भयो बहु मेला॥
स्तुति निंदा सब कर कर जाहिं। मेरे हरष शोक कुछ नाहीं॥३॥
राग-भावते सज्जन मानो। दोष-भावते दुर्जन जानो॥
राग द्वेष दोऊ मम नाहीं। दया न तम चेतन पदमाहीं॥४॥

कव्वाली

सखी उस श्यामने जाके कहीं बंसी बजाई है॥
पड़ी धुन कानमें मेरे मुझे सोती जगाई है॥

सुनी बंसी हुई हूं बस रही बसमें न मैं अपने ।।
किधर आऊं कहां जाऊं मुझे बौरी बनाई है ।।
तनकसी बांस पोरी गजब क्या कर रही आली ।।
न जाने कौन बंश उपजी कहां किस बनसे आई है ।।
किया तप कौनसा ऐसा मुरलियाने लगी होठों ।।
अधर रस ले रही पापिन श्यामने मुँह लगाई है ।।
बशर क्या चीज है जगमें मोहे सुर नर मुनी सारे ।।
करी तिरलोकी बस सारी धूम ऐसी मचाई है ।।
मैं बारंबार बलिहारी हूँ उस बांके बिहारीके ।।
नजर कर मेहर की मुझपर सखी बंसी सुनाई है ।।
घुसी है तन वदन मेरे घोर मुरलीकी धुन प्यारी ।।
गई है फैल नस नसमें अजब बदरीसी छाई है ।।

कव्वाली

अरे नर तरनको तेरे धर्म बेड़ा बनाया है।।
धर्म का पवन है निकला अठारह ही पुरानोंमें।
धर्मका दाव है मीठा वेद चारोंने गाया है।।
शेषके शीसपर धरती धर्मके कारने अटकी।
चढ़ा आसमानके ऊपर बिना खंभे टिकाया है।।
धर्म कीना हरीचँदने दई बिप्परको रजधानी।
आप बिकनेको काशीमें सहित कुनबेके आया है।।
जगतमें नाम है रोशन मोरध्वज धर्म नहिं हारा।
कि देकर हाथमें आरा कुँवरके शिर चलाया है।।
रहेगी धर्मकी चरचा जो किरपा रामकी होगी।
जिन्होंने धर्म कीना है उन्हें वैकुंठ पाया है।।

राग जंगला

चले आते हैं मोहन बनसे धेनु चराये हुए।।
लिये बंसी अधरपै मधुर सुर गाते हुए।।
उड़ी गोरज परी मुखपै छबीले लालहूके।।
लटकता नाकमें मोती कुंडल छलकाये हुए।।

मुकुटकी लटकपै अटकी मोरी अँखिया यह लाला।।
ले गई जो मन मेरा जुलफें नागिन बल खाये हुए।।
नयनकी सैन दे मोहीं सकल ब्रजहूकी बाला।।
परी वश प्रेमके छुटती नहीं छुड़ाए हुए।।
अपने कृष्णदासपै कीजिये कृपा नंदजूके लाला।।
दीजिये दरश चरणनसों रहूं लिपटाये हुए।।

भजन

सखी दईमारेने बैयां मरोरी झटका लगा लगा।।
कर बरजोरी गागर फोरी ले मटकी दे पटकी नंदरानी काहे ना बरजोरी।।
चूनर फारी सगरी उघारी हो कड़ा आ पकड़ा मोरी करकी चूरियां फोरी।।
कुंजविहारी दूंगी गारी, नटखट जा झटपट जा करे दूध माखनकी चोरी।।
घर घर आवे जोर जमावे, बहु बरजा आ गर्जा मानों आन बदरिया घेरी।।

थिएटर तर्ज

दो पता बेल फलपाती। कहीं देखी सीया जाती।।टेक।।
तुम सुनो फूल फुलवारी, क्यों जान बूझ चुप धारी।।
(जी) नाहक हमको कलपाती।। कहीं देखी सिया०।।१।।
टरे कर्म रेख नहीं टारी, यहां प्रान हुए लाचारी।।
(जी) हमरी कछु नहिं पार बसाती।। कहीं देखी सिया०।।२।।
सिया क्यों नाहक तड़फावे, हमें तुझ बिन कुछ नहिं भावे।।
(जी) आ क्यों नहिं धीर बँधाती।। कहीं देखी सिया०।।३।।
यों रुदन करै हम मनमें, ज्यों बदरी बरसै घनमें।।
(जी) हमारी भर भर आवे छाती।। कहीं देखी सिया०।।४।।

कव्वाली

जपो मन नाम ईश्वरका वही मुक्तिका दाता है।।
वही पालन करे सबका वही सबका विधाता है।।
सिवा उसके नहीं तेरा न कोई पार है जगमें।।
न बेटा है न पोता है न बंधू है न माता है।।
करे अभिमान क्यों धनका न तेरे साथ जावेगा।।
न जावे साथ रथ हाथी धर्म ही साथ जाता है।।

पड़ा क्यों नींदमें गाफिल सफर अब होनेवाली है।।
सँभलकर बांध ले विस्तर अभी वह काल आता है।।
सता मत बेगुनाहोंको दुखा मत चित्त दीनोंका।।
न सुख पावे कभी वह भी किसीको जो सताता है।।
शुकर भेजो तुम उस रबका बजा ला तू सिदक दिलसे।।
वही मुक्तिका दाता है वही सबका विधाता है।।

भजन

तैंने वृथा जन्म गँवाया, ऐसा अमोलक रतन है मिला।।
पापोंसे बचना धर्म कमाया जगदीशके गुन गा ले।।
नेक कामोंमें इसको लगाना।।
तैंने वृथा जन्म गँवाया० ।।१।।
जबतक रहे जानमें जान अपनी।।
शुद्ध आचरन रहे मान दमन करके ईश्वरसे प्रीति बढ़ाना।।
तैंने वृथा जन्म गँवाया०।।२।।
पछताना तुमको पड़ेगा।।
फिर आखिर उस बखत क्या हाथ आवेगा।।
झाड़ दामन जहानसे जाना।।
तैंने वृथा जन्म गँवाया० ।।३।।
समझाये समझत कदापि न पापी।।
यह मन बड़ा चंचल अहाल फिरे पापों में मस्त और दीवाना।।
तैंने वृथा जन्म गँवाया०।।४।।
काशीसा मार्ग उसको चलाकर।।
गुण उसके गा आनन्द पार लाभ अपनी जिह्वासे उठाना।।
तैंने वृथा जन्म गँवाया०।।५।।

राग जंगला

प्रभु तेरी लीला अपरम्पार।।
अखंड ब्रह्मांड रचे सब तेरे कोउ न पावत पार।।
सुर नर मुनि जन खोजत हरि पढ़ पढ़ वेदविचार।।
अगम निगम सब तोहिं पुकारे हे प्रभु अगमअपार।।

चंद्र सूर्य दो दीपक कीने अगम ज्योति निरंकार ।।
अनहद शब्द बजत झनकारा संतन प्राण अधार ।।
नाना रूप धरो सब अंतर देखो मनहिं बिचार ।।
दश अवतार धरे इस जगमें हैं सब मुक्तिके द्वार ।।
रूपचंद पूजो हित चित कर साखी कृष्णमुरार ।।

श्लोक

यं ब्रह्मा वरुणेंद्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायंति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यंति यं योगिनो
यस्यांतं विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ।।१।।
उभयोः प्रकृतिस्त्येका प्रत्ययभेदेन भिन्नवद् भाति।
कलयति कश्चिन्मूढो हरिहरभेदं विना शास्त्रम् ।।२।।

राग धनाश्री

धिक् धिक् नर नारी नाम विना।। नाम विना हरिभजन विना ।।टेक।।
विधवा नारि जैसे करत शृंगार। शोभा न पावे बिन भरतार।।
तेग बिना कैसे रजपूत। नाम विना कैसे अवधूत।।
जिस कुलमें हरिको नहिं दास। सो कुल जानो साधो भूत पिशाच ।।
कहै कबीर सूनो अटल प्रताप। तन मन धन संतन परिवार।।

गजल

दरश अपना जो तुम रघुवर दिखा दोगे तो क्या होगा ।।
जो तुम भानू सो कुलभानू तेरा भानूसा है मुखड़ा।
बुझा है दिलकमल मेरा खिला दोगे तो क्या होगा ।।
इसी संसारसागरमें मेरी नैया जो बहती है।
निकट तटके जो तुम रघुवर लगा दोगे तो क्या होगा ।।
इसी संसारमें रजनी मुझे आते बुरे सुपने।
सोये अज्ञानमें जाहिर जगा दोगे तो क्या होगा ।।
तेरे ही नित्यदर्शनकी लगी है प्यास हे भगवन्।
बरसा कर स्वातिकी बूंदें मिटा दोगे तो होगा ।।

गजल

जरा टुक सोच रे ग़ाफिल क्या दमका ठिकाना है।।
निकल जब यह गया तनसे तो सब अपना बेगाना है।।
मुसाफिर तू है औ दुनियां सरां है भूल मत ग़ाफिल।।
सफर परलोकका आख़िर तुझे दरपेश आना है।।
लगाता है अबस दौलतपै क्यों तू दिलको अब नाहक।।
न जावे संग कुछ हरगिज यहीं सब छोड़ जाना है।।
न भाई बंधु है कोई न कोई आशना अपना।।
बख़ूबी गौरकर देखा कि मतलबका जमाना है।।
रहो लग यादमें हककी अगर अपनी शफा चाहो।।
प्रबश दुनियांके धंधोंमें हुआ तू क्यों दीवाना है।।

कवित्त

कैसे तुम गणिकाके अवगुण ना गिने नाथ,
कैसे तुम भीलनीके जूठे बेर खाये हो।।
कैसे तुम द्वारकामें द्रौपदीकी टेर सुनी,
कैसे तुम गजके काज नंगे पग धाये हो।।
कैसे तुम सुदामाके छिनमें दरिद्र हरे,
कैसे तुम उग्रसेन बंदितै छुड़ाये हो।।
मेरी बेर एती देर कान मूँद रहे नाथ,
दीनबंधु दीनानाथ काहेको कहाये हो।।

भजन

जै तू विश्वनाथ है ईश्वर जिसकी होकर मैं बिकी लाज हमारी हाथ तुम्हारे। जरा मुशकिलको कीजो आसान हरि।। जप तेरा करैं हम निसदिन प्राणसे। आजिजपर हो मेहेरबान हरि।। मेरे पाप को हरो हर। हरनेवाले आप हरि।। सिंह गौको घेर खड़ा है। जरा इधर भी करना ध्यान हरि।। गौर ना राखी लाज हमारी। जावेगी दुनियासे प्रतीत।। ना लेगा कोई नाम तिहारा। तुम्हें जानेंगे झूठा जहान हरि।। प्रहलाद भगतके कारण ईश्वर। नरसिंह होकर फोड़े थंभ।। नाम लिये गज गनिका तारी। और अहल्या नार हरि।।

राग भैरव। रंगत कव्वाली

नहीं कुछ काम दुनियांसे मेरा श्रीकृष्ण प्यारा है ॥
यशोदा नन्दका नन्दन मेरे नैनोंका तारा है ॥
गये जब आप मथुराको वहां जा कंस मारा है ॥
उठा उँगलीपै गिरिवरको इँद्रका मान मारा है ॥
तूही दाता तूही माता तूही भ्राता तूही बंधू ॥
तूही इस देहका मालिक मुझे तेरा सहारा है ॥
कहत हरिदास जो जीमें सदा सेवक तुम्हारा है ॥
मिलोगे जब मुझे आकर तभी मेरा गुजारा है ॥

राग सोरठ

सुदामाजीको देखत श्याम हँसे ॥
धीरे धीरे चलकर द्वारिका पहुँचे तंदुल भेंट धरे ॥सुदामाजीको०॥१॥
पूँछत रुकमन सुन पति मेरे तुम्हारो क्या लगे ॥सुदामाजीको०॥२॥
बालकपनके मित्र हमारे एक चटसाल पढ़े ॥सुदामाजीको०॥३॥
सूरदास प्रभुकी यह बानी भुजा पसार मिले ॥सुदामाजीको०॥४॥

राग भैरवी

चले गये दिलके दामनगीर ॥
जब सुध आवे तुम्हरे दरशकी उठत कलेजे पीर ॥
नटवर वेष नैन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर ॥
वृन्दावन बंसीबट त्यागो सुंदर जमुना नीर ॥
आप जाय द्वारिका छाये खारी नदके तीर ॥
सब गोपियनको नेह बिसारो ऐसे भये बेपीर ॥
सूरदास ललिता उठ बोली आखिर जात अहीर ॥

भोपाली

वैद्यवाकी जानत बला पीर उठी अरे रे रे ॥
हम तलफत तलफत दिनराती। आवेंगे श्याम लगावेंगे छाती ॥
जोगन लाई ना जोगकी पाती। सुनत गिरी मुरझाय सूख गई सरे रे रे ॥
एक दिन श्याम सखा मिल होरी। होरी खेलत मोरी बैंयां मरोरी ॥
अँखियनसे असुवनकी डोरी। मोतियनकी लड़ि टूट टपक गई खरे रे रे ॥

सर सूखे मछली उर चेती। अब पछतात पलोटत रेती।।
शंभू चुन चुन हरी पलखेती। चिड़ियां चोंच दिखायके उड़ गई फरे रे रे।।

प्रभाती

रात सखीरी सुपनेमें देखे राम लक्ष्मण सिया जनकलली री।।
वह हैं ठाढ़े सिंह पँवरपर मैं अपने घरसे निकसी री।।
देख बदन व्याकुल हुई माता मानो गये सिंहभवन गढ़से री।।
कनकभवनमें डार गलीचे ओट करी पीतांबरकी री।।
चौसरसारकी बाजी लगाई हिलमिल सखियोंकी चँवर ढुली री।।
कहत कौशल्या सुनो कैकई क्या सुपनेकी मैं बात कहूं री।।
राम लक्ष्मण दोनों सनमुख देखे और देखी सिया जनकलली री।।

लावणी

हरएक ढूंढते फिरें जंगलमें दवा रसायनकी बूटी ।।
नारायण है सरजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ।।
कोई ढूंढते उस बूटीको जिसमें पारा तुरत मरे ।।
कोई खोदते जड़ी जो कोई तन कायाका दुःख हरे ।।
बहुत लोक खोदे पृथिवीको वृक्ष काटते हरे हरे ।।
उनको भी फिर यम काटेगा कहैं शब्द यह खरे खरे ।।
हरी हरी बूटी यह समझो हरिनाम है सबसे परे ।।
उस बूटीको जिसने पाया वह भवसागर सहज तरे ।।
रामरसायन पाई हमने और रसायन सब झूठी ।।
नारायण है सजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ।।१।।
कोई कहे हम शिंगरफ मारें और काढें गंधकका तेल ।।
कोई ढूंढते जड़ी ब्राह्मी कोई ढूंढते अंबर बेल ।।
हमने सबको देखा यारो यह तो है सब झूंठे खेल ।।
अमर नाम है दत्त निरंजन उसको अपने मनमें मेल ।।
मनको मारके बना ले कुशता जो गुजरे सो दिलपर झेल ।।
तनको शोधकर शुद्ध करो तुम तजो झूँठ और तजो झमेल ।।
जौन पुरुष फूंके धातूको उनके हियकी है फूटी ।।
नारायण है सरजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ।।२।।

कोई फूंकते अबरक तांबा कोई फूंकते हैं हड़ताल ।।
हमने अपने मनको मारा मिले हमें गोविंद गोपाल ।।
कोई कहे हम सोना मारें और करें पैसैको लाल ।।
ठगठग कर लूटें दुनियांको इनको इक दिन ठगेगा काल ।।
कोड़े कहे हम चांदी मारें जिसमें हों कुछ धन और माल ।।
इन कर्मोंको जो कोई करता होता उनका हाल बेहाल ।।
बहुत घोटते खरलमें धातु संतोंनेकाया कूटी ।।
नारायण है सरजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ।।३।।
कोई मारते हैं कलीको जिसमें होवे पुष्ट शरीर ।।
घरको फूंकके तवाह किया वे अमीरसे होगये फकीर ।।
साधूका नहीं जौन धर्म मारे धातु करके तदबीर ।।
कहैं देवीसिंह हरे हरे कह यह जैसी हैगी अकसीर ।।
खाकसारकी जबां रसायन इसमें है हर एक तासीर ।।
जबांसे वह मुरदेको जिलावे जबांसे दे डाले जागीर ।।
बनारसी यह कहे हमारी रामनाम हैगी घूटी ।।
नारायण है सरजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ।।४।।

प्रभाती

निर्धनके रामनाम प्रमु भगवतके बड़े हितकारी।
दुर्बल रूप धरे सुदामा पूँछत है उनकी नारी।।
हरिसमान जो मित्र तुम्हारो क्योंना हरिने बिपदा टारी।।१।।
तू त्रिया चतुरंग लाड़ली कौन कुमत तेरी मति हारी।
कर्म हमारे लिखे दरिद्र क्या करे मुकुटधारी।।२।।
सेतुबन्ध रामेश्वर परसे गौतमनारी शिला तारी।
छिनमें लंका फूंक दई है हनूमान आज्ञाकारी।।३।।
पकड़ प्रहलाद खम्भसे बांधे भीड़ पड़ी भगतपरजी।
फोड़ खंभ प्रगटे नारायण जीते असुर बलकारी।।४।।
भारी दान दियो शिवशंकर भस्मासुर चाहे नारी।
तीन लोक शिवशंकर डोले जब ना मिले है गिरिधारी।।५।।
मोहनीरूप धरे नारायण आन मिले मुकुटधारी।
तुलसीदास आश रघुबरकी पाप कटे अति दुखभारी।।६।।

जिला

रघुवर कौशल्याके लाल मुनिका यज्ञ रचानावाले॥
पहुँचे जनकपुरी दरम्यान। तोड़ा सब रचानेवाले मान॥
उन्होंने नहीं किया अभिमान। शिवका धनुष तोड़नेवाले॥१॥
सीता ब्याही आई रनवासा। माता कैकई भई उदासा॥
दिया चौदा वर्ष वनवास। अहल्या नारी उद्धारनेवाले॥२॥
जा बांधा सिन्धुका सेत। सुवरण लंका कर दी खेत॥
लंका भगत विभीषण हेत। जलपर सिला तरानेवाले॥३॥
बेड़ा आन बड़ा मझधार। तुम बिन कौन लगावे पार॥
तुम तो होगे खेवनहार। मेरी धीर धरानेवाले॥४॥

भजन

धीरे चलो सुकुमार सुकुमार सिया प्यारी॥ धीरे चलो०॥ देशदेशके भूपति बैठे, कर करके अपना शृंगार शृंगार शृंगार॥ सिया प्यारी०॥१॥ जैमाला लीनी कर सोहे, राजा रहे सब निहार निहार निहार ॥ सिया प्यारी०॥२॥ चंद्रबदन चंचल मृगनैनी, शोभा है जिसकी अपार अपार अपार ॥ सिया प्यारी०॥३॥ नादिर छबिको शेष न बरने, जिह्वा हैं जिसके हजार हजार हजार सिया प्यारी॥ धीरे चलो सुकुमार० ॥४॥

भजन

चल करके देखो प्यारी जी एक गोपलली है ॥
सांवरी सलोनी रंग ढंग भली है ॥
द्वारे खड़ी सिसकती नहीं कहती कुछ है ॥
कुछ भेद नहीं खुलता विरहकी जली है ॥१॥
कुछ होश नहीं उसको बेहोश पड़ी है ॥
पायल कहीं पड़ी है कहीं चंपकली है ॥२॥
छबि देखनेमें उसकी श्रीकृष्णकीसी है ॥
सुंदर अनूप रूप सांचेमें ढली है ॥३॥
चंपा सखी वह गोपी नाहीं मेरी जानमें ॥
नंदगामसे वह आयी वह छैल छली है ॥४॥

राग यमन कल्याण

धीरे चलो तुम गोपलली री

नूपुरधुन जो सुन पावेगा, घेरेगा फिर आय गली री ।।१।।
उरझो बड़ा कठिनसों सुरझत, हम अबला वह पुरुष बली री ।।२।।
नारायण नित दाँवघातमें, लगो रहत वह छैल छली री ।।३।।

राग देश

रघुवर तुमको मेरी लाज।। रघुवर तुमको मेरी लाज ।।
सदा सदा मैं शरण तिहारी, तुम बड़े गरीबनवाज ।।
पतित-उद्धारन बिरद तिहारो, श्रवणन सुनी अवाज ।।
हौं तो पतित पुरातन कहियो, पार उतारो जहाज ।।
अघखंडन दुखभंजन जनके, यही तिहारो काज ।।
तुलसीदासपर कृपा जो करिये, भक्तिदान देओ आज ।।

राग भैरवी

राम जप राम जप राम जप बावरे ।
घोर भवनीरनिधि नाम निज नाव रे ।।
एक ही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साध रे ।
ग्रसे कलि रोग योग संयम समाधि रे ।।
भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे ।
रामनामहीसे अंत सबहीको काम रे ।।
जगनभ बाटिका रही है फैल फूल रे ।
धुआं कोसो धौल है तू देख मत भूल रे ।।
रामनाम छोड़ तू भरोसो करे और रे ।
तुलसी परोसौ त्याग मांगै कूर कौर रे ।।

राग भूपाली दादरा

विश्वपतिके ध्यानमें जिसने लगाई हो लगन ।।
क्यों न होवे शांति उसको क्यों न हो उसका मन मगन ।।
काम क्रोध लोभ मोह शत्रु हैं सब महाबली ।।
इनके हननके वास्ते जितना हो तुझसे कर यतन ।।
ऐसा बना सुभावको चित्तकी शानीसे तू ।।

पैदा न ईर्षाकी आंच दिलमें करे कहीं जलन ।।
मित्रता सबसे मनमें रख त्यागके वैरभावको ।।
छोड़ दे टेढ़ी चालको ठीक कर अपना तू चलन ।।
जिससे अधिक न्न है कोई जिसने रचा है यह जगत ।।
उसका ही रख तू आसरा उसकी तू पकड़ शरन ।।
छोड़के राग द्वेषको मनमें तू उसका ध्यान कर ।।
तुझपै दयाल होवेंगे निश्चय है यह परमात्मन् ।।
जैसा किसीका हो अलम वैसा ही पाता है वह फल ।।
दुष्टोंको कष्ट मिलता है श्रेष्ठोंका होता दुख हरन ।।
आप दयास्वरूप हैं आपहीका है आसरा ।।
कृपादृष्टि कीजिये मुझपै हो वक्त जब कठिन ।।
मनमें हो मेरे चांदना मोक्षका रास्ता मिले ।।
मारके मन जो केवला इन्द्रियोंका करे दमन ।।

भैरवी

मत भूले रामका नाम जपाकर ईश्वरकी माला ।
जपा विभीषण राम लंकका राज दिया सारा ।।
लंका फूंकी ठीक खाकमें रावन दे डारा ।।१।।
जपा राम प्रह्लाद खंभ कर दिया लाल सारा ।
गिरिवर परसे गेर दिया जल जमुनाकी धारा ।।२।।
भाई बन्धु तेरा कुटुम्ब कबीला सब ही संसारा ।
आवागवन लग रहा जायगा दुनियाँसे न्यारा ।।३।।
धन और दौलत जोड़ ज़मींमें गड़वाया सारा ।
धरा ढका रह जावे लाद जाय टांडा बंजारा ।।४।।
जियाराम स्वामी रघुनन्दन हरका मतवारा ।
सिंहरूप नरसिंह उदर हिरनाकुशका फाड़ा ।।५।।

राग देश

नहीं ऐसा जनम बारंबार ।।टेक ।।
क्या जानूं कछु पुन्य प्रगट भये मानुष लिया औतार ।।
बढ़त पल पल घटत छिन छिन चलत ना लागे बार ।
वृक्षके जो पात टूटे लगैं नहीं पुनि डार ।।

भवसागर अति जोर कहिये विषम औखी धार।
सूरतका नर बांध बेड़ा बेगि उतरो पार।।
साधू संत महंत जाके चलत करत पुकार।
दासी मीरा लाल गिरिधर जीवना दिन चार।।

भजन

बोलो सीताराम सीताराम सीताराम।
बोलो राघोराम राघोराम राघोराम।।
गौर बरन सिया जनकनंदिनी, रघुवर हैं घनसुंदर श्याम।।बोलो०।।
रघुवर लछमन भरत शत्रुघन, जापर चँवर ढुलावे हनुमान।
क्रीट मुकुट मकराकृति कुंडल, कठिन धनुष कर सारंग पान।।बोलो०।।
विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो, गौतमनारी पठाई निजधाम।
सरजूके तीर अयोध्यानगरी, जहां विचरत सिया लछमन राम।।बोलो०।।
तुम मत बिसर जाओ मेरे मनसे, तुम बिन निकस जात मोरे प्रान।
तुलसीदास यह ध्यान धरत हैं, चौंसठ घड़ी भजो आठों जाम।।बोलो०।।

राग भैरवी

मन कहां लगा दियोरी--राम संग क्यों तोड़ी।।
वहांसे आया भजन करनको कहां बुद्धि गई तोरी।
परत्रियासे देह लगा दियो हरसे राखे चोरी।।१।।
माया मोह जालका फंदा करता मेरी मेरी।
चेता जाय तो चेत बावरे यमने फांसी गेरी।।२।।
गई जवानी आया बुढ़ापा कहां बुद्धि गई तेरी।
कहें कबीर सुनो भाई साधो निर्गुण माला फेरी।।३।।

लावणी

धन धन भोलानाथ बांट दिये तीन लोक एक पलभरमें।
ऐसे दीन दयालु शंभु कौड़ी भी रखी नहीं घरमें।।टेक।।
प्रथम दिया ब्रह्माको वेद वह बना वेदका अधिकारी।
विष्णुको दे दिया सुदर्शन चक्र लक्ष्मीसी सुंदर नारी।।
इन्द्रको दे दई कामधेनु और ऐरावतसा बलकारी।
कुबेरको सारी वसुधा देकर किया तुमने भंडारी।।
अपने पास पात्र नहीं राखा राखा तो खप्पर करमें।।१।।

अमृत तो देवताओं को दे दिया आप हलाहल पान किया।
ब्रह्मज्ञान दे दिया उसे जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया।।
भागीरथको गंगा देदी सब जगने स्नान किया।
बड़े बड़े पापियोंका तुमने पलभरमें कल्याण किया।।
आप नशेमें रहो चूर और पीते भंग नित खप्परमें।।२।।
रावणको दे दी लंका और बीस भुजा दस शीश दिये।
रामचन्द्रका धनुष बाण वह तुमने तो जगदीश दिये।।
मनमोहन मोहनी देदी मोरमुकुट तुम ईश दिये।
मुक्तिहेत काशीमें बास भगतोंको बिश्वे बीस दिये।।
अपने तनपर बस्तर नहीं रखते मगन रहो बांघबरमें।।३।।
नारदको दे दई बीन और गंधरवोंको राग दिया।
ब्राह्मणोंको दिया करमकांड तो संन्यासी को त्याग दिया।।
जिसपर आपकी कृपा हुई है उन को तो अनुराग दिया।
देवीसिंह कहे बनारसीको सबसे उत्तम भोग दिया।।
जिसने पाया उसीने पाया महादेव तुम्हारे बनमें।।४।।

भजन

मनमें धीरजको धारो, मित्रो भली करे करतार।
प्राण जाँय पर धर्म न छोड़ो, सच्चे मित्रसे रिश्ता जोड़ो।।
कभी नहीं मुँह अपना मोड़ो, चाहे आफत होवें हजार।।मनमें०।।१।।
राजपाट और माल खजाना, नहीं साथ तेरे कुछ जाना।
अंतसमय कुछ काम न आना, है जितना परिवार।।मनमें०।।२।।
जिसने नहीं धर्मको टारा, उसने जगत जीत लिया सारा।
निश्चय परभू देत सहारा, कभी न होवे हार।।मनमें०।।३।।
कायर डरे और घबरावे, नहीं धर्म पै दुःख ड़ठावे।
अन्य पदारथपर ललचावे, शर्मा करो विचार।।मनमें०।।४।।

भजन

जप ईश्वरको जप ईश्वरको, आलसने क्यों घेरा जिवड़े।।जप०।।
कहां गये चक्रवर्ती राजे, जिनके बजे थे चहूं दिश बाजे।
कालका शिरपर बादल गाजे, यह जग रैन बसेरा।।जप०।।१।।

कीन्ही ना तैंने कोई भलाई, स्याही गई सफेदी आई।
वृद्ध भया बीती तरुणाई, पलपल होत अबेरा।।जप०।।२।।
दिन गया सेवा करत पराई, सोसो सारी रात गँवाई।
मूर्ख तैनू मत ना आई, अब तू जाग सबेरा।।जप०।।३।।
सुनो सुनो मित्र प्यारे लालो, ईश्वरकी तुम आज्ञा पालो।
सतविद्याका दीपक जालो, आगे बहुत अँधेरा।।जप०।।४।।
बाग लगाये बनाये बंगले, शीशे लगाये रँगाये जंगले।
कौन चलेगा इनको संग ले, अंतको मरघट डेरा।।जप०।।५।।
कर दे दिलतैं दूर जहालत, उथे नहीं कोई करता वकालत।
सच्चे साहबकी सच्ची अदालत, अमली होवे नवेडा।।जप०।।६।।
सिध सनकादिक दश औतारी, अमीर बड़े बड़े मायाधारी।
विक्रम भोज दधीचसे भारी, कर गये जोगीदा फेरा।।जप०।।७।।

भजन

जिस गाड़ीमें जाना तुझको, एक पल छिनमें अब आती है।।
कुछ देर नहीं बांधो बिस्तर, घंटी उपदेश सुनाती है।।
करे शंट और अंजन गरजे है, सुनसुन जिया थरथर लरजे है।
कर तरक वतन उस देश चले, जिससे आती नहीं पाती है।।
एक उतरी आन सवारी है, एक चलनेकी कर रही तैयारी है।
दुनियां एक अजब स्टेशन है, जहां रेल चले दिनराती है।।
जिसे जिस दरजेमें जाना है, वैसा महसूल चुकाना है।
यहां टिकट ही देखे जाते हैं, नहीं पूंछते कौनसी जाती है।।
यहां घूमते चोर उचक्के हैं, जो दावघातके पक्के हैं।
कोई गांठ कतर ले जाता है, कोई करता आतमघाती है।।
जब होती रेल रवाने है, तब छूटत देश बेगाने हैं।
रो रोके पीछे देखे हैं, गाड़ीसे पाकर जाती है।।
जो ताज और तखतका बाली है, तब अब जाता हाथसे खाली है।
जो कुन्बेका अभिमानी है, अब संग ना उसके साथी है।।
कहो क्या लाया संग तू तोशा है, तेरा जिसपर इतना भरोसा है।
खान पानका संग सामान नहीं, लगी भूख और प्यास सताती है।।

यदि कितना ही धन जोड़ेगा, उसे अंतको एक दिन छोड़ेगा।
संग धर्मकी बिलटी जायेगी, और वस्तु संग नहीं जाती है।।
क्यों लंबा पांव पसारा है, चंदमिनटका यहां गुजारा है।
क्यों लड़े है साथ मुसाफरके, तू अमीचंद बड़ा उतपाती है।।

राग पूर्वी

बगियांमें चलोगी कि ना प्यारी, मैं तो तिहारी मलिनियां।।
केसर फूली री झुकी गुलाब क्या-डारी
चंपाचंबेलीकी खूब खुशबोई ।।१।।बगियांमें चलोगी०।।
चंपा चंपा बेला बेला दोनां दोनां मरुवा मरुवा
खुशबोई बलिहार बलिहार ।।२।।बगियांमें चलोगी०।।
प्यारी कहा मान कहा मान कहा मान बगियां०।।
अरजी यह हमारी सुन भानकी दुलारी
श्याम सखीजाय बलिहार बलिहार बलिहार।।३।।
बगियांमें चलोगी कि ना प्यारी, मैं तो तिहारी मलिनियां।।

भजन

लक्ष्मण सीता कौन हरी।। लक्ष्मण सीता कौन हरी।।
गिरपर चढ़कर सागर देखा कहीं जल भरने गई।।१।।
उड़ उड़ कागा मढ़ीपर बैठे कुटिया सूनी पड़ी।।२।।
क्या हर ले गया लंकापति रावण नहीं तो सिंहभाषी।।३।।
तुलसीदास आश रघुबरकी बनमें बिपत पड़ी।।४।।

भजन

चलो गोकुलमें नन्दके यहां लाला हुआ।
यदुवंशके कुलका उजाला हुआ।।टेक।।
सखी व्रजकी सब बाला। होके दिलमें खुशहाल।।
बैयां गरदनमें डाल। नाचें दे देके ताल।।
आज नंदका नसीबा प्यारी आला हुआ ।।चलो०।।१।।
सभी हिलमिलके ग्वाल। करें जै जै गोपाल।।
बाजें शंख और घड्याल। जन्म लीनो नन्दलाल।।
झूले अँगनमें पलना जहां डाला हुआ ।।चलो०।।२।।

बआज व्रजमें महाराज। करने भक्तोंके काज।।
जोड़ा सारा समाज। करो दर्शन चल आज।।
सुख नैनोंको पहुँचानेवाला हुआ ।।चलो०।।३।।
देखो गोकुलकी ओर। सावन भादौंका शोर।।
बोले पंछी बन मोर। मानों बदरीकी घोर।।
बूंदें आनंदकी बरसानेवाला हुआ ।।चलो०।।४।।

थेटर तरज

छुड़ाओ रे अब पत मेरी जात बिहारी।
पछताये गम खाना मुरझाना कुमलाना हेरी हेरी।।
जय बंसीधर श्याम मुरारी जय नखपर गिरिवर धारी।।
भरी सभामें द्रुपदी पुकारी बिपत पड़ी मोहिं भारी।।
दुष्ट दुशासन नग्न करत है खबर न लीनी मोरी गिरिधारी।।
बिपत निवारण नाम तिहारो कहां गये अब मुरारी।।
द्वारावतीमें टेर सुनी है चौपट खेलत गिरिधारी।।
आनंद बोल पाँसे डार दिये हैं बढ्यो चीर ना अंतभारी।।
जय जय जय हरि चीर बढ़ाये रंगरंगके खिल आये।।
कहीं केशरी कहीं सब्ज है भक्तरामके मन भाये।।

राग जिला

जगके रूठेसे क्या हुआ जाके राम हैं रखवारे हो ।।
चल देख प्यारे खंभमें नरसिंह हुए औतारे हो।।
हिरण्याक्षको मारके प्रह्लाद रक्षा करे हो।।
अब देख प्यारे सभामें जहां कपट पाँसे परे हो।।
द्रौपदीके चीर बढ़ायके खैंचत दुशासन थके हो ।।
चल देख प्यारे समरमें अक्षौहणियों दल खड़े हो ।।
बच्चे बच्चे मृदुलके गज घंट वापर पडे हो।।
चल देख प्यारे लंकमें संकट बिभीषण परे हो ।।
तुलसी सराहें रामजीको रघुनाथ जन रक्षा करे हो ।।

भजन

इतना संदेशा मोरा ऊधो मोहनसे कहना ।।
दर्शन बिन अखियां तरसे आंसू छमाछम बरसें ।।
फूलोंमें फूल चँबेली, नरगस खिली अकेली ।।
ऐसा गुलाब प्यारा, कांटोंमें खिल रहा न्यारा ।।
जबसे हरि मथुरा पधारे रे तड़फत प्राण हमारे ।।
तेरे बिन सब बिरज भई खाली सुनियो तूही बनवारी ।।
गोपियोंका संग प्रभु त्यागा रे कुबेरीके संग जालागारे ।।
तैंने कुलको लाज लगाई सुनियो तू हो जदुराई ।।
तेरा चंद्रसखी जस गावे, रे राधा चरनोंपै बल जावे ।।
कब आवेंगे श्याम हमारे, तरसत हैं नैन हमारे ।।

राग देश

प्रभु मोरे अवगुण चित ना धरो ।
समदरसी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो।।
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो।।
जब मिलकै दोउ एक बरन भए सुरसरि नाम परो।।
इक लोहा पूजामें राखत इक घर बधिक परो।।
यह दुबिधा पारस जानत नहिं कंचन करत खरो।।
एक जीव इक ब्रह्म कहावत सूरश्याम भगरो।।
अबकी बेर मोहिं पार उतारो नहिं प्रन जात टरो।।

राग कलिंगड़ा

दयानिधि तेरी गति लखि ना परे।।टेक।।
पिता-बचन टारे सोई पापी सो प्रह्लाद करे ।
ताहि उबारनको श्रीरघुबर नरसिंह रूप धरे ।।
एक गऊ जो देत विप्रको सो सुरलोक तरे ।
राजा नृग कोटिन गऊ दीनी सो काहे कूप परे ।।
धनते धर्म धर्मते अधरम अकरम कर्म करे ।
हिरण्याक्ष दशकन्ध विरोधी कुटँबसहित उबरे ।।

वेद पुराण जोई जस गावे तिस बलि यज्ञ करे ।।
ताही पकड़ पाताल पठायो कैसे सूर तरे ।।

भजन

मन लागा मेरा यार फकीरीमें ।।टेक।।
जो सुख पावों नामभजनमें सो सुख नाहिं अमीरीमें ।।
भला बुरा सबको सुनि लीजै कर गुजरान गरीबीमें ।।
प्रेमनगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में ।।
हाथमें कूँडी बगलमें सोंटा चारों दिसा जगीरीमें ।।
आखिर यह तन खाक मिलैगा, कहां फिरत मगरूरीमें ।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो साहिब मिले सबूरीमें ।।

भजन

भजन तो बनता नहीं मन तो सैलानिया ।।टेक।।
लड्डू चहिये पेड़ा चहिये और ठण्डा पानियां।
चाबनेको पान चहिये और पीकदानियां ।।१।।
हाथी चहिये घोड़ा चहिये तंबू आसमानियां।
किला तो अटूट चहिये फौज धूड़ धानियां ।।२।।
सेज तो मलूक चहिये रूपवन्ती रानियां।
पुत्र तो सपूत चहिये कुलकी निशानियां ।।३।।
माया चहिये दौलत चहिये और राजधानियां।
कहत गंगादास दुनियां मायामें भुलानियां ।।४।।

भजन

प्रह्लाद कहे लड़कोंसे बोलो राम राम राम ।।टेक।।
सांचे जानो वचन हमारे हरके नाम सदासे प्यारे।
करदो मनसे न्यारे सारे काम काम काम ।।१।।
अगनीमेंसे आन बचाये हरिके नाम काम वे आये।
चाहे पिताजी तनकी मेरी तात उड़ादो चाम ।।२।।
गुरुकी मार बहुतसी खाई और कछू ना सीखा भाई।
पुरी अयोध्या गांव उन्होंके धाम धाम धाम ।।३।।
सेढूसिंह हरका गुन गावे सब गुनियोंको शीस नवावे।
फूलसिंह कहते कर जोड़ी लीनी ठान ठान ठान ।।४।।

राग ठुमरी

बिगड़ी कौन बनाई प्रभुबिन बिगड़ी कौन बनाई रे ।।
बनी बनीका सब कोई साथी बिगड़ीका कोई नाहीं रे ।
भरी सभामें लज्जा राखी दीनानाथ सहाई रे ।।१।।
कड़वी बेलकी कड़वी तुंबडिया सब तीरथ कर आई रे ।
गंगा न्हाई गोमती न्हाई तबहुँ न गई कड़वाई रे ।।२।।
कहे मन्दोदरी सुन पिया रावण ये क्या कुमति कमाई रे ।
उनकी जानकी तुम हरलाये छिनमें कलंक लगाई रे ।।३।।
मेघनादसे पुत्र हमारे कुंभकरणसे भाई रे ।
लंका जैसे कोट हमारे सात समुंदर खाई रे ।।४।।
हनुमानसे पायक जिनके लछमन जैसे भाई रे ।
जलती अगनमें कूद पड़े हैं कोट गिनैं नहिं खाई रे ।।५।।
मेघनाद से पुत्र हमारे कुंभकरण बलदाई रे ।
एक बार सनमुख हो लड़े हैं युग युग होत बड़ाई रे ।।६।।
कहे मन्दोदरी सुन पिया रावण मानो मेरी कहाई रे ।
संग सिया ले मिलो रामसे लंका लेओ बचाई रे ।।७।।
तिरिया जात बुद्धिकी ओछी उनकी करत बड़ाई रे ।
धुर मन्दिरसे पकड़ मगाऊं राम लक्ष्मण दोनों भाई रे ।।८।।
एक लख पुत्र सवालख नाती मौत आपनी आई रे ।
तुलसीदास आश रघुबरकी राज विभीषण पाई रे ।।९।।

राग भैरवी

पतराखो मेरी श्याम मुरारी। द्रुपदसुता हो दीन पुकारी ।।
केश पकड़ ले आयो दुःशासन बीच सभा मोहि करत उघारी ।।
तुम बिन और नहीं कोई मेरो। मैं अनाथ हूं शरन तिहारी ।।
शूरसमूह भूप सब बैठे भीषम द्रोण करण व्रतधारी ।।
करत नहीं कोई बात धर्मकी। इन पतितन मेरी अपत बिचारी ।।
अति आतुर पांडवसुत डोले। भीम गदा करसों महि डारी ।।
रही ना टेक प्रथम पारथकी। जबसे धरणी धर्मसुत हारी ।।
लाक्षागृहते जरत उबार्‍यो। अब क्यों देर करी बनवारी ।।

सदा सहाय करी दासोंकी। कौन चूक अब दियो बिसारी ।।
जैसे जल बिन मीन तड़फ रही। सो गति अब हो रही है हमारी ।।
छूटत लाज आज चरणनकी। उघड़त माथ अनाथ पुकारी ।।
तुम तो दीनानाथ कहावो। मैं अनाथ हूं दीन दुखारी ।।
समरथ और नहीं कोई तुम विन। जासों जाय कहूं गीरधारी ।।
पल छिनमाहीं नग्न होत हूं। बेग आओ श्रीकुंजबिहारी ।।
सूरके स्वामी विलंब न कीजो। फिर पछताओगे देख उघारी ।।

मुबारक जलसा

सभाका जलसा सालाना मुबारक हो मुबारक हो।
सभी भाइयोंका मिल जाना मुबारक हो मुबारक हो।।
करो धन्यवाद ईश्वरका करी जिसने सभा कायम।
धर्म जलसोंका दिखलाना मुबारक हो मुबारक हो।।
अहो धन्य भाग नगरीके जहां किरपा करी ईश्वर।
धर्म ध्वजोंका फैलाना मुबारक हो मुबारक हो।।
हमारे धर्मके प्यारे पधारे हैं जो जलसेमें।
महाशयोंका यहां आना मुबारक हो मुबारक हो।।
बहुत मश्कूर हैं उनके जो आये दूरसे चलकर।
धर्म अपनेको पहिचाना मुबारक हो मुबारक हो।।
नगरके वासियो भाइयो अहो किसमत तुम्हारी है।
महाशयोंका दरश पाना मुबारक हो मुबारक हो।।
यह दुर्लभ है सभा तुमको करो मिलकर धरम चरचा।
तुम्हें यह वक्त शुभ आना मुबारक हो मुबारक हो।।
जहांतक हो सके तुमसे करो हिम्मत यह काकाराम।
धर्म अपनेको फैलाना मुबारक हो मुबारक हो।।

भजन

गम खाना चीज बड़ी है कोई देखो तो गम खायके।।टेक।।
गम प्रह्लाद भक्तने खाया। मरे ना अग्नीबीच जलाया।।
ऊँचे पर्वत परसे गिराया। नरसिंहरूप धरके प्रभुने।।
भगतकी बिपत हरी है।। गम खाना चीज बड़ी है०।।१।।

गम खाया था ध्रुव भगतने। पांच बरसके तजे जगतने।।
बसे जायके धामपुर। वहां अबतक ध्वजा खड़ी है।। गम ०।।२।।
गम बिभीषण भगतने खाया। अटलराज लंकाका पाया।।
रावण अपना नाश कराया। जिसकी लंका जली है।। गम०।।३।।
गम खाया था द्रौपदी बाई। चीर बढ़ाय दिये जदुराई।।
काकाराम गम खा ले भाई। गम नहीं अमरत झड़ी है।।गम०।।४।।

भजन- तीनताल

जप मन हरि गिरिधारी।

सांवली सूरतपर छलबल मतकर, जप मन हर गिरिधारी।।
मोर मुकुट माथे तिलक बिराजे, पीताम्बर छबि साजे रे।
गल मोतियनकी माल बिराजे, कानन कुंडल अलंकारी।।जप०।।१।।
मैं जो चली जमुना जल भरने, आगे मिल गये श्याम रे।
बैंयाँ मरोड़ी मेरी गागर फोड़ी, करता का हा खवारी।।जप०।।२।।
जमुनाके ओरे धोरे धेनु चरावे ग्वाल बाल सँग जावे रे।
ले बंसी पढ़ फूंक बजावे, ओढत कंबल कारी।।जप०।।३।।
वृंदाबनमें रास रचो है, निरत करत राधेश्याम रे।
चंद्रसखी तेरा जस गावे, हरिचरनोंपर वारी।।जप०।।४।।

भजन

क्या तन माँजता रे आखिर मट्टीमें मिल जाना।।
माटी ओढ़े माटी पहने माटीका सिरहाना।
माटीका कलबूत बनाया जिसमें भँवर समाना।।
माटी कहे जहानको तू नित उठ मांजे मोहिं।
एक दिन ऐसा आवेगा मैं माँजूंगी तोहिं।।क्या०।।
चुन चुन लकड़ी महल बनाया बंदा कहे घर मेरा।
ना घर तेरा ना घर मेरा चिड़ियां रैन बसेरा।।
माल पड़ा साहूकारका चोर लगा सरकारी।
एक दिन मुशकिल आन बनेगी महसूल भरेगी भारी।।
फाटा चोला भया पुराना कबलग सीये दरजी।।
दिलदी महरम कोई ना मिल्या जो मिल्या अलगरजी।।

नानक चोला अमर भया संत जो मिल गये दरजी।।
दिल दे महरम संतजन मिल गये उपकारनके गरजी।।

भजन-तरज थिएटर

आओ जी आओ मेरी धीरके धरानेवाले।।टेक।।
बंसी बजानेवाले। गैयां चरानेवाले।
गिरवर उठानेवाले। मेरे मनमोहन प्यारे।। आओ जी आओ०।।१।।
दु:शासन चीर उतारे। देखत हैं राजन सारे। कोई ना बरजनहारे।
लखत अनीति सब हांसीके उड़ानेवाले।।आओ जी आओ०।।२।।
तेरे तो भगतोंका मैं कहीं नहीं अपमान देखा।
मानी गुमानियोंका खंडन अभिमान देखा।
देना तुम मुझको दर्शन। होकर तुम मुझपर परशन।
हूंगी मैं चेरी तेरी। लज्जा तुम राखो मेरी। काहेको करते देरी।
हो जगबंदन कंसनिकन्दन देवकीनंदन
टीकाके मन भानेवाले।। आओ जी आओ०।।३।।

भजन

मुखड़ा क्या देखे दर्पनमें कोई दया धर्म नहीं मनमें।।मुखड़ा०।।
कागजकी एक नाव बनाई छोड़ी गंगाजलमें।।
धर्मी धर्मी पार उतर गये पापी डूबे जलमें।।मुखड़ा०।।
आमकी डाली कोयल राजी मछली राजी जलमें।।
साधू रहते बनमें राजी गृहस्थ रहते धनमें।।मुखड़ा०।।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी जोड़ रखी बरतनमें।।
यमके दूत पकड़ ले जाये रह गई मनकी मनमें।।मुखड़ा०।।
घोट घाटके पगड़ी बांधे तेल लगावे जुलफनमें।।
कहत कबीरा सुनो भाई साधो क्या यह लड़ेंगे रनमें।।मुखड़ा०।।

भजन

अमोलक राम नाम प्यारे गावें भगतजनन सारे।।
इस दुनियांमें आनकर किया न कुछ भी काम।।
जैसे आये मुड़ चले नहीं लिया रामका नाम।।
रही दिलकी दिलमें प्यारे।।अमोलक राम०।।

भाई बंधू यार भी मतलबकी संतान॥
यह झूँठी माया है सच्चा रामका नाम॥
तू मनको अपने समझा रे॥अमोलक राम०॥
गफलत छोड़ो भाइयों निन्दाको दो बिसार॥
हालत बिगड़ी देशकी अब तो करो सुधार॥
फूटसे देश देश मारे॥अमोलक राम नाम०॥
रावण जैसे सूरमाकी लीनी जिसने जान॥
रामायण पढ़कर देखलो उनका हाल बयान॥
बान रखते थे शंका रे॥अमोलक राम नाम०॥
राम नामपर भाइयो, कर दो जान कुरबान॥
जिन्होंने राम ध्याया हो गये अंतर्ध्यान॥
बसे हैं चरणोंमें प्यारे॥अमोलक राम नाम०॥
आनन्द सभाकी बिनती सुनियो मेरे राम॥
दिलकी तृष्णा सब मिटे छूटें खोटे काम॥
बुला दो सतके जैकारे॥अमोलक राम नाम०॥

भजन

क्यो आलस में आया तू उठकर सन्ध्या कर ले॥
भोर हुए पक्षी सब जागे ध्यानी ध्यान करन अब लागे॥
करवट बदले पड़ा अभागी, वृथा जन्म गँवाया॥
तू हरका नाम सुमर ले, तू उठकर सन्ध्या कर ले॥
मल मल धोया तैंने तनको साफ किया नहिं मैले मनको॥
वृद्ध युवा और बालकपनको, जगमें यूं ही डुबोया॥
गई तेरी बुद्धि किधर ले, तू उठकर सन्ध्या कर ले॥
बिना किये प्रभूकी भक्ति, नहीं आत्मामें हो शक्ति॥
विद्या बढ़े अविद्या घटती, होवे ज्ञान सवाया॥
हिरदेमें नेम यह करले,तू उठकर सन्ध्या कर ले॥
प्रातकाल और नित्य शामको, तजि गृहस्थके कामको॥
जप ईश्वरके ॐ नामको, जिसने तुझे बनाया॥
तू शर्मा उसे पकड़ ले,तू उठकर सन्ध्या कर ले॥

भजन

पड़ा लोभ मोहके जालमें, नर आयु क्यों खोता है ।।
यह जग जान रैनका सुपना जिसको कहता अपना ।।
भूल गया तू प्रभुका जपना। फँसा हुआ धनमालमें ।।
क्या सुखकी नींद सोता है। नर आयु क्यों खोता है ।।
चले अकड़पन छैल छबीला। अंतसमय सब हो जा ढीला ।।
काम न आवै कुटुम्ब कबीला। फूला जिनके ख्यालमें ।।
कोई साथ नहीं होता है। नर आयु क्यों खोता है ।।
अब तू शिर धुन क्या पछतावै। रुदन करे और शोर मचावै ।।
कुछ नहीं तेरी पार बसावै। चूका पहली चालमें ।।
क्यों खड़ा खड़ा रोता है। नर आयु क्यों खोता है ।।
समझ सोचकर कदम उठाना। मुशकिल मनुष जनम है पाना ।।
कहे मुरारी जो है दाना। भज हरको हरहालमें ।।
जो सबहीका दाता है। नर आयु क्यों खोता है ।।

भजन

गोविंदा तोरी महिमा अपरम्पार।।
आप ही एक अनेक रूप भयो,
नाम धरो संसार।। गोविंदा तोरी०।।
जड़को चेतन चेतनको जड़,
करत न लागे बार।। गोविंदा तोरी०।।
रवि शशि पावक शब्द प्रकाशे,
खिल रही अजब बहार।। गोविंदा तोरी०।।
अपनी माया आपहि जाने,
निर्भय कहत पुकार।। गोविंदा तोरी०।।

होरी

श्याम बिन बीती जात बहार। सखी री फागनके दिन चार।।
जिनके घर सखी श्याम बसत हैं। हँस हँस रंगमें होरी खेलत हैं।
सोई सुहावन नार। सखी री फागनके दिन चार।।१।।
हमारे पिया परदेश सिधारे। अतर अबीर डूबे रँग सारे।

बिरहाने दीनी जार। सखी री फागनके दिन चार॥२॥
आ बनवारी मूली सरसों फूली। श्याम बिना मोरी सुधबुध भूली।
जल गयी पांचों बहार। सखी री फागनके दिन चार॥३॥
सास ननंद बैरनिया मोरी। बैयां मरोरी मेरी चुरियां फोरी।
छीना गलेका हार। सखी री फागनके दिन चार॥४॥
मीरा शाह यह मनमें आवें। अबके फागन पिया गल लावे।
शीस करूं बलिहार। सखी री फागनके दिन चार॥५॥
श्याम बिन बीती जात बहार। सखी री फागनके दिन चार॥

होरी

रसियाको नारि बनाओ री॥
कटि लहँगा गलमांहि कंचुकी, चुंदरी शीश उढ़ाओ री॥
गाल गुलाब दृगनमें अंजन, बिंदी भाल लगाओ री॥
नारायण तारी बजायके, यशुमति निकट नचाओ री॥
रसियाको नारि बनाओ री॥

होरी

खेलें संत सभी मिल होरी॥
शंकर ताल मृदंग बजावत, ग्वाल डफनकी जोरी॥
नारद कमला शेष बिरंची, आदि वैकुंठ फाग मचो री॥
दूल्हा जगदीश बनो री, खेलें संत सभी मिल होरी॥
ध्रुव प्रह्लादअम्बरीश सुदामा, ऊधो अर्जुन बिदुर सजोरी॥
गोपी ग्वाल बिभीषण भीषम, इन सब रंग भरो री॥
तरे लोचनपर गयो री। खेलें संत सभी मिल होरी॥
नामदेवजी और कबीरा, कुबड़ीने ठाट मढ़ो री॥
अंका बंका नरसी मेहता, सूरने कान करो री॥
मानो ऐसे होरी होरी। खेलें संत सभी मिल होरी॥

होरी जंगला

या व्रजमें कैसी धूम मचाई॥
इतते आई सुघड़ राधिका, उतते कुँवर कन्हाई॥
खेलत फाग परस्पर हिलमिल, या छबि बरनि न जाई॥

घर घर बजत बधाई। या व्रजमें कैसी धूम मचाई॥१॥
बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, और मँजीरा सहनाई॥
उड़त गुलाल भये बादल सब व्रज देख लुभाई॥
मानो मघवा झरिलाई। या व्रजमें कैसी धूम मचाई॥२॥
राधे सैन दई सब सखियां, यूथ यूथ मिलि आई॥
पकड़ो री पकड़ो श्याम सुंदरको, यह अब जाने न पाई॥
करूं अपने मन भाई। या व्रजमें कैसी धूम मचाई॥३॥
छीन लियो मुख मुरली पीतांबर, शिरपर चुनरि उढ़ाई॥
बेंदी भाल नयनमें काजर, नकबेसर पहराई॥
मानो नयी नारि बनाई। या व्रजमें कैसी धूम मचाई॥४॥
कहां गये तेरे पिता नंदजी, कहां यशोमति माई॥
कहां गये तेरे सखा संगके, कहां अब बलदेव भाई॥
तुझे अब लेत छुड़ाई। या व्रजमें कैसी धूम मचाई॥५॥
फगुआ लूंगी तब्र जाने दूँगी, कर लेवो लाख उपाई॥
लूंगी चुकाय कसर सब दिनकी, तैं चित चोर कन्हाई॥
छीन दधि माखन खाई। या व्रजमें कैसी धूम मचाई॥६॥
धन गोकुल धन धन श्रीवृंदावन, धन यमुना यदुराई॥
राधे श्याम जुगल जोड़ीपर, सूरदास बलि जाई॥
प्रीति उर रही न समाई। या व्रजमें कैसी धूम मचाई॥७॥

होरी जंगला

श्याम मोसों खेलो ना होरी। पा लागूं कर जोरी॥
गैयां चरावत मैं निकसी हूं सास ननंदकी चोरी॥
सगरी चुनरिया न रंगमें भिजाओ इतनी सुनो बात मोरी॥
दिल धड़कत मेरो सांस चढ़त है देह कांपत गोरी गोरी॥
अबीर गुलाल लिपट गयो मुखसों सारी रंगमें बोरी॥
सासु हजारों गारी देगी और बालम जीती ना छोरी॥
फाग खेलके तैंने मोहन क्या कीनी गति मोरी॥
सूरदास आनन्द भयो उर लाज रही कुछ थोरी॥

होरी

मत जावो री आज कोई पनिया भरन॥

ठाड़ो मगमें मोहन इक इकको मारत पिचकारी तक तक॥
हूं जो देख दौडूं डर भागी, मुख अपना इक वारी ढक ढक॥
हाथ कांपन लागे पांव थलकन लागे छतियां करन लागी नारी धक धक॥
जाको चाहे रंगमें भिगोवत तारी देत गारी गावै बक बक॥
आयो बसंत प्रभुकी उमँगमें फूल रही फुलवारी झक झक॥

श्रीरामायणजीकी आरती

आरती श्रीरामायणजीकी॥ कीरति कलित ललित सियपीकी॥टेक॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। वालमीकि विज्ञान विशारद॥
शुक सनकादिक शेष अरु शारद। बरणि पवनसुत कीरति नीकी॥१॥
संतत गावत शम्भु भवानी। औ घटसंभव मुनिवरज्ञानी॥
व्यास आदि कविपुंग बखानी। कागभुशुंड गरुड़के हियकी॥२॥
चारिउ वेद पुराण अष्टदश। छहों शास्त्र सब ग्रंथनको रस॥
तन मन धन संतनको सर्बस। सारअंश सम्मत सबहीकी॥३॥
कलिमलहरणि विषयरस फीकी। सुभग श्रृंगार मुक्ति युवतीकी॥
हरणि रोग भवभूरि अमीकी। तात मात सबविधि तुलसीकी॥४॥

श्रीगीताजीकी आरती

आरति श्रीगीताकी कीजै। जीवत जनम लाभ यह लीजै॥टेक॥
गीता-ध्यान करैं भगवान। गीता है शिवजीके प्रान॥
जिन गीताको सुना न कान। ते नर कहिये पशूसमान॥१॥
गीताको जो सुनैं सुनावैं। ते नर परम मोक्षको पावैं॥
ज्ञानदास गीता जिन जानो। एक अखंड ब्रह्म पहँचानो॥२॥

श्रीदुर्गाजीकी आरती

जै अंबे गौरी मैया, जय अंबे गौरी मैया॥
(जै मंलमूर्ती मैया जै आनंद-करणी)
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्माशिवरी॥टेक॥
मांग सिंदूर बिराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वलसे दोउ नैना चंद्रवदन नीको॥जै अंबे०॥१॥

कनकसमान कलेवर रक्तांबर राजे।
रक्तपुष्प गलमाला कंठनपर साजै।।जै अंबे०।।२।।
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्र धारी।
सुरनर मुनिजन सेवत तिनके दुखहारी।।जै अंबे०।।३।।
कानन कुंडल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिन चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती।।जै अंबे०।।४।।
शुंभ निशुंभ विदारे महिषासुरघाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती।।जै अंबे०।।५।।
चौंसठ जोगिनी गावत नृत्य करत भैरूं।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरूं।।जै अंबे०।।६।।
भुजा चार अतिशोभित खड्ग खप्पर धारी।
मनवांछित फल पावत सेवत नरनारी।।जै अंबे०।।७।।
कंचनथाल विराजत अगर कपूर बाती।
मालकेतुमें राजत कोटि रतन ज्योती।।जै अंबे०।।८।।
या अंबेजीकी आरती जो कोई नर गावे।
भणत शिवानंद स्वामी सुख संपति पावै।।जै अंबे०।।९।।

शिवजीकी आरती

जै शिव ओंकारा, हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा।।टेक।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजैं।।जै शिव०।।१।।
दोय भुज चारु चतुर्भुज दशभुजतैं सोहै।
तीनों रूप निरखतां त्रिभुवन जन मोहै।।जै शिव०।।२।।
अक्षमाला वनमाला रुंडमालाधारी।
चंदन मृगमद चंदा भाले शुभकारी।।जै शिव०।।३।।
श्वेतांबर पीतांबर वाघंबर अंगे।
सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे।।जै शिव०।।४।।
करमध्ये कमंडलु चक्र त्रिशूल धरता।
जग कर्ता जग भर्ता जग सँहार कर्ता।।जै शिव०।।५।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर 'ओम्' मध्ये ये तीनों एका ।।जै शिव०।।६।।
त्रिगुणस्वामीजीकी आरती जो कोई नर गावै।
भणत शिवानंद स्वामी मनबांछित फल पावै ।।जै शिव०।।७।।

श्रीरामचंद्रजीकी आरती

आरती कीजै राजा रामचंद्रकी(हरि हरि)दुष्टदलन सीतापतिजी।।टेक।।
पहली आरती पुष्पकी माला। कालीनाग नाथ लाये कृष्ण गोपाला।।१।।
दूसरी आरती देवकीनंदन। भक्त उधारन कंसनिकंदन।।२।।
तीसरी आरती त्रिभुवन मोहै। रतनसिंहासन सीतारामजीको सोहै।।३।।
चौथी आरती चहुँयुग पूजा। देवनिरंजन स्वामी और न दूजा।।४।।
पाचवीं आरती रामजीको भावै रामजीका सब यश नामदेव गावै।।५।।

श्रीहनुमानजीकी आरती

आरती कीजै हनुमान ललाकी। दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी।।टेक।।
जाके बलसे गिरिवर कांपे। रोग दोष जाके निकट झांके।।१।।
अंजनिपुत्र महाबलदाई। संतनके प्रभु सदा सहाई।।२।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सियासुधि लाये।।३।।
लंका ऐसे कोट समुद्र ऐसी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।४।।
लंका जारि असुर सब मारे। सीतारामजीके काज सँवारे।।५।।
लक्ष्मण मुरछि परे धरणीमें। आनि सजीवन प्राण उबारे।।६।।
पैठि पताल तोरि यमकातर। अहिरावणके भुजा उखारे।।७।।
बायें भुजा सब असुर सँहारे। दहिने भुजा सब संत उबारे।।८।।
सुर नर मुनिजन आरती उतारैं। जै जै जै हनुमान उचारैं।।९।।
कंचनथार कपूरकी बाती। आरती करत अंजनीमाई।।१०।।
जो हनुमानजीकी आरति गावैं। बसि वैकुंठ अमरपद पावैं।।११।।
लंकविध्वंस किये रघुराई। तुलसीदासस्वामी आरति गाई।।१२।।

श्रीकृष्णचन्द्रमहाराजकी आरती

कर जोडू और शीस नवाऊँ सुनियो नन्दकुमार।
तुम मालिक संसारके दाता मैं हूँ ताबेदार।।१।।

मैं सेवक आधीन तुम्हारा तुम पूरण औतार।
नन्दके लाला ब्रजके रसिया यशुमतिकेर दुलार ॥२॥
तूही सहाय है ब्रजके स्वामी तूही मालिक संसार।
लोक और परलोकके राजा तूही सबका करतार ॥३॥
तूही पैदा करे तूही पालै फिर तूही डाले मार।
तेरा भेद वेद नहीं पावे माया तेरी अपार ॥४॥
तेरा ध्यान जो मनमें लावै मनके जाननहार।
मन उसका दर्पण बन जावे देखी बागबहार ॥५॥
तेरो नाम जपै जो स्वामी दुनियांमें नर नार।
आवागमनसों छूटै वह हो भवसागर पार ॥६॥
तेरे यैवनकी मनमोहन है दुनियामें जो बहार।
आँखोंमें यह ज्योति कहां है जो देखे दीदार ॥७॥
चरनकमलका करौं आसरा राखो नन्दकुमार।
कर जोडूं और शीस नवाउँ सुनियो नन्दकुमार ॥८॥

श्रीकृष्णजीकी आरती

आरती जुगलकिशोरकी कीजै। तन मन धन नौछावर कीजै ॥
जगमग ज्योति जगामग थाल। आरती कीजै श्रीमदनगोपाल ॥
गौर श्याम मुख निरखत कीजै। हरिको स्वरूप नयन भरि पीजै ॥
रवि शशिकोटि बदनकी शोभा। ताहि देख मेरा तन मन लोभा ॥
ओढ़े नील पीतपट नारी। कुंजविहारी सुनो गिरिवरधारी ॥
मोरमुकुट कर मुरली सोहे। नटवरकला निरखि मन मोहे ॥
फूलनकी सेज फूलन गल माला। रतनसिंहासन बैठे नंदलाला ॥
मात यशोदा आरती लाई। यह शोभा मेरे मन भाई ॥
श्रीपुरुषोत्तम गिरिवरधारी। आरती करत सकल व्रजनारी ॥
नन्दनन्दन वृषभानुकिशोरी। परमानंद स्वामी अविचल जोरी ॥
प्रेममग्न हो आरती गावैं। बसि वैकुंठ परमपद पावैं ॥

छंद। श्रीकृष्णजीकी आरती

(श्रीकृष्णजीके) कमलनेत्र कटि पीतांबर अधर मुरली गिरिधर ।
मुकुट कुंडल कर लकुटियां साँवरे राधेबरं ॥

कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपियन मनहरं।
पीतवस्त्र गरुड़वाहन चरण नित सुखसागरं।।
करत केलि कलोल निशिदिन कुंजभवन उजागरं।
अजर अमर अडोल निश्चय पुरुषोत्तम अपरापरं।।
गोपीनाथ गोपाल गिरिधर कंस हिरनाकुशहरं।
गल फूलमाला विशाललोचन अधिक सुंदर केशवं।।
बंसीधर वसुदेव छैया बली छल्यो हरि वामनं।
जल डूबत गज राख लीनो लंका छेद्यो रावणं।।
सप्तद्वीप नौखंड चौदा भुवन कीने (रामजी) इक पलं।
द्रौपदीकी लाज राखी कहां लौं उपमाकरं।
दीनानाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरं।
कविदत्त विलास निशिदिन नाम जप नित नागरं।
प्रथमै गुरुजीके चरण बंदों जासों ज्ञान प्रकाशितं।
आदि विष्णु जुगादि ब्रह्मा सेवते शिव शंकरं।
श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशय कृष्ण यदुपति केशवं।
श्रीराम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर राघवं।
रामकृष्ण गोविंद माधव वासुदेव श्रीवामनं।
मच्छ कच्छ वराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनं।
मथुरामें केशोराय बिराजैं गोकुल बालमुकुंदजी।
श्रीवृंदावनमें मदन मोहन गोपीनाथ गोविंदजी।
धन्य मथुरा धन्य गोकुल कहां श्रीपति अवतरे।
धन्य यमुना नीर निर्मल ग्वाल बाल सखा तरे।
नयनीत नागर करत अस्तुति शिव विरंचि मनमोहनं।
कालिन्दी तट करत क्रीड़ा ग्वाल अद्भुत सुंदरं।
ग्वाल बालसखा बिराजे संग राधा भामिनी।
बंसी बट तट निकट यमुना मुरली टेर सुहावनी।
अलकनंदा अरु भागीरथी दोनों हरि मिलि संग चले।
हमसे पतित अनेक तारे औरनको तारन चले।
श्रीकृष्ण कलिमल हरण सबके जो भजै हरिचरनको।
भक्ति अपनी देहु स्वामी भवसागरके तरनको।

जगन्नाथ जगदीश स्वामी बद्रीनाथ विश्वंभरं।
द्वारकाके नाथ श्रीपति केशवं करुणामयं।
कृष्ण अष्टपदी धुन सुन कृष्णलोक स गच्छतं।
गुरु रामानन्द नीमानन्दस्वामी कवि दत्तदास समापतं।
अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णंदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचंद्रं भजे।

श्रीरामचंद्रजीकी आरती

जै श्रीरघुनाथा जै श्रीरघुनाथा।
दोउ कर जोडे विनऊं प्रभु मेरी सुन बाता।।
तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता।
तुम हो सुजन संघाती भुक्ति मुक्ति दाता।।
चौरासी प्रभु बंद छुड़ावो मेटो यम त्रासा।
निशि दिन प्रभु मोहे राखो अपने संग साथा।।
भरत शत्रुहन राजत लछमन हनुमंता।
जगमग जोत बिराजे, सीता जगमाता।।
किरीट मुकुट कर धनुष बिराजै पीतांबर राजै।
कटि कंकण पग नूपुर रुनक झुनक बाजैं।।
हनुमत नाच बजावे नूपुर ठुम ठैया।
कंचन थालमें आरती करत कौशल्या मैया।।
भाल तिलक गले माल बिराजै शोभा अति भारी।
तुलसीदास छबि निरखत राम धनुर्धारी।।
जै श्रीरघुनाथा जै श्रीरघुनाथा।
दोउ कर जोडे विनऊं प्रभु मेरी सुन बाता।।

श्रीशिवजीकी आरती

जयशिव जयशिव परम पराकृत ओंकारेश्वर तुम शरणं।
भज नमामि शंकर भजामि शंकर भवाब्धि भोला तुम शरणं ।।१।।
दशभुज मंडन पंचवदन शिव त्रिनयन शोभा अति सुखदं।
जटा जूट शिर गंग विराजे श्रवणन कुंडल अति रमणं ।।२।।

ललाट चमकत रजनीनायक पन्नगभूषण गौरीशं।
त्रिशूल छलकत विद्युतशोभा धिम धिम बाजत धुनि मधुरं ॥३॥
गजचरमांबर वाघंबर हर कपालमाला रमेशं।
पंचवदनपर गणपति सोहे पृष्ठे गिरिपति ज्वालेशं ॥४॥
भसमीलेपन सर्वांगे शिव नंदीवाहन अति रमणं।
वामांके शिव गिरिजा विराजत घंटानादित धुनिमधुरं ॥५॥
सिद्धेश्वर अमलेश्वर शंकर कपिलेश्वर शिवकोटेशं।
कपिलासंगम निर्मलजल शिव कोटि तीर्थजल अघहरणं ॥६॥
नर्मदा कावेरी जलसंगम मध्ये शोभित गिरिशिखरं।
इन्द्रादिक सनकादिक सेवित रंभा निरखत धुनि मधुरं ॥७॥
मंगलमूर्ती प्रणवाष्टक अद्भुत शोभा मृडभवनं।
शिवसनकादिक पढ़त स्तोत्रं मनइच्छाफल दुर्गेशं ॥८॥

श्रीरामचंद्रजीकी वंदना

श्रीरामचंद्र कृपालु भज मन हरण भवभय दारुणं॥
नवकंजलोचन कंजमुख करकंज पदकंजारुणं॥१॥
कंदर्प अगणित अमित छबि नवनील नीरज सुंदरं।
पटपीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरं॥२॥
शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं।
आजानुभुज शरचापधर संग्रामजित खरदूषणं॥३॥
भज दीनबंधु दिनेश दानवदुष्टवंशनिकंदनं।
रघुनन्द आनंदकंद कौशलचन्द दशरथनन्दनं॥४॥
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनिमनरंजनं।
मम हृदयकंज निवास कुरु कामादि खलदलगंजनं॥५॥

निर्गुण प्रभुजीकी आरती

जय जगदीश हरे प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्तजनोंके संकट छिनमें दूर करे॥
जो ध्यावैं फल पावें दुख बिनसे मनका।
सुख संपति घर आवे कष्ट मिटे तनका॥१॥

मातपिता तुम मेरे शरण गहूं जिसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी ।।२।।
तुम पूरण परमात्मा तुम अंतर्यामी।
परंब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ।।३।।
तुम करुणाके सागर तुम पालन करता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भरता ।।४।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किसविध मिलूं गुसांई तुमको मैं कुमति ।।५।।
दीनबंन्धु दुख-हरता तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ।।६।।
विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ संतनकी सेवा ।।७।।
जय जगदीश हरे प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्तजनोंके संकट छिनमें दूर करे ।।८।।

इति सनातनभजनदीपिका समाप्त।

*****

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४१०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS

